शताब्दीकाव्यम्

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः



Devavani Parishad New Delhi



शताब्दीकाव्यम्

(इलाहाबादविश्वविद्यालयस्थापनाशताब्दीमधिकृत्य प्रणीतं)

पञ्चसर्गात्मकं काव्यम्

रचनाकारः

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः

इलाहाबादविश्वविद्यालये संस्कृतप्रवाचकः



वैजयन्त प्रकाशन

इलाहाबाद

शताब्दी समारोह-समिति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त
आर्थिक सहायता से प्रकाशित ।

प्रथम संस्करण : जनवरी १९८७ ई०
मूल्य : पन्द्रह रुपये मात्र ।

एकेडमी प्रेस, दारागञ्ज, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित
१००० प्रतियाँ ।

SHATĀBDĪKĀVYAM

(A Poem Consisting of Five Cantos composed on the Allahabad University Centenary Celebration.)

Written by

Abhiraj Dr. Rajendra Mishra
Reader in Sanskrit
University of Allahabad.



Vaijayanta Prakashana
Allahabad

Published with the Financial Assistance given by
The Centenary Celebration's Committee.
University of Allahabad.

First Edition : January 1987
Price : Rupees Fifteen only

Printed at Academy Press, Daraganj, Allahabad.
1000 Copies.

हार्दिक शुभकामना

संस्कृत-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रीडर, सहृदय कवि तथा लोकप्रिय अध्यापक डॉ० राजेन्द्र मिश्र उन युवा कर्मठ प्राध्यापकों में से एक हैं जो विश्वविद्यालय की चौमुखी उन्नति के लिये पूर्णतः समर्पित हैं। अपने कार्यकाल के प्रारंभिक चरण में ही मैं डॉ० मिश्र से प्रभावित हुआ। जैसे-जैसे मैंने उनका परिश्रम तथा अध्यापकोचित गुण देखा, वैसे ही वैसे मेरा सहज स्नेह उनके प्रति बढ़ता गया। मैंने देखा कि डॉ० मिश्र न केवल एक सहृदय कवि, पढ़ने-पढ़ाने में दत्तचित्त तथा छात्र-समुदाय में अत्यन्त सम्मान्य प्राध्यापक हैं, बल्कि काव्य-जगत् में भी वह एक स्थापित हस्ताक्षर हैं। पिछली सितंबर में उनके संयोजन में सम्पन्न ऐतिहासिक शताब्दी-समारोह-हिन्दी कविसम्मेलन में मैंने उनकी लोकप्रियता देखी। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है और गर्व भी है कि इलाहाबाद यूनिवर्सिटी आज भी प्रतिभाओं से खाली नहीं है।

राजेन्द्र जी अभी-अभी भारत-सरकार द्वारा इण्डोनेशिया में दो बर्षों के लिये संस्कृत विषय में विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त किये गये हैं जिसका सारा श्रेय वह मुझे देते हैं। उनका नाम संस्तुत करने के कारण मैं इस दायित्व को स्वीकार करता हूँ, फिर भी मैं यही कहूँगा कि यह विद्वानों द्वारा किया गया उनकी प्रतिभा का मूल्यांकन है।

डॉ० मिश्र के संयोजन में संस्कृत की एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी इसी पखवारे में सम्पन्न होने जा रही है जिसमें राष्ट्र के अनेक संस्कृत-विद्वान् भाग ले रहे हैं। इसी अवसर पर संस्कृत में लिखा गया उनका काव्य 'शताब्दीकाव्यम्'

भी प्रकाशित और विमोचित हो रहा है। मेरी दृष्टि में यह विश्वविद्यालय की शताब्दी के अवसर पर उसकी सबसे बड़ी पूजा है। कविता में की गई इस पूजा में हम सबकी, समूचे विश्वविद्यालय-परिवार की भक्तिभावना सम्मिलित है।

इस संग्रह करने योग्य, महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति की रचना के लिये मैं डॉ० मिश्र को हार्दिक शुभकामना एवं आशीर्वाद देता हूँ। विश्वविद्यालय के अतीत एवं वर्तमान का जो प्रामाणिक दुर्लभ इतिहास रचनाकार ने अथक परिश्रम के उपरान्त प्रस्तुत किया है, वह सचमुच प्रशंसनीय है। आशा है विश्वविद्यालय का विद्वत्-समुदाय तथा प्रबुद्ध नागरिक—दोनों ही इस काव्य से लाभान्वित होंगे।

सस्नेह
रामेश्वर प्रसाद मिश्र
कुलपति,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

१ जनवरी, १९८७ ई०
कुलपति-निवास।

□

प्रास्ताविक

गतवर्ष लखनऊ दूरदर्शन द्वारा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छायाचित्राङ्कन के क्रम में विश्वविद्यालय-शताब्दी-समारोह-समिति के सचिव आदरणीय अग्रज डॉ० टी० एल्० वेङ्कटेश ने मुझसे विश्वविद्यालय के अतीत एवं वर्तमान से समन्वित पृष्ठभूमि पर संस्कृत में कुछ लिखने का स्नेहपूर्ण आग्रह किया। मैंने पाँच छन्द लिखे जो इस काव्य में (प्रस्तावना सर्ग के प्रथम तीन पद्य तथा संगणना सर्ग के अन्तिम दो पद्य) यथासन्दर्भ संग्रहीत हैं। मेरे ही स्वर में इन छन्दों का प्रसारण भी हुआ दिल्ली दूरदर्शन से।

उन्हीं दिनों मेरे मन में यह आकांक्षा जगी कि क्यों न देववाणी संस्कृत में विश्वविद्यालय के शताब्दी-समारोह की मधुस्मृति को चिरस्थायी बनाया जाय? इससे लोगों को संस्कृत भाषा की अस्मिता एवं युगानुकूल क्षमता का बोध भी होगा साथ ही साथ समारोह के प्रति संस्कृत-विभाग की दायित्वपूर्ण कृतज्ञता भी ज्ञापित हो सकेगी।

निवेदन करने पर श्रद्धेय कुलपति डॉ० रामेश्वरप्रसाद मिश्र जी ने न केवल मेरे प्रस्ताव का अभिनन्दन किया बल्कि काव्य को विश्वविद्यालयीय व्यय से प्रकाशित कराने का वचन भी दिया। डॉ० मिश्र की उसी सहृदयता एवं उदारता का प्रतिफल है कि 'शताब्दीकाव्य' प्रकाशित होकर विज्ञ पाठकों के कर-कमलों में पहुँच रहा है।

काव्य में प्रस्तावना, संस्थापना, संगणना, गवेषणा तथा प्ररोचना शीर्षक पाँच सर्ग हैं जिनमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अतीत एवं वर्तमान से सम्बद्ध कुछ पक्षों की काव्यमयी समीक्षा एवं वर्णना प्रस्तुत की गई हैं।

प्रकाशन से पूर्व इस काव्य के अनेक अंशों को संस्कृत के मर्मज्ञ विद्वान् तथा विश्वविद्यालय के वर्तमान प्रतिकुलपति प्रो० त्रिविक्रम पति जी ने तन्मयता से सुना एवं सराहा है। उनकी सबल संस्तुति का आदर करते हुए

शताब्दी-समारोह प्रकाशन-समिति के समायोजक प्रो० दामोदर दास खन्ना जी ने काव्य के प्रकाशनार्थ अपेक्षित धनराशि स्नेहपूर्वक प्रदान की है। मैं इन दोनों विभूतियों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

काव्य की रचना-सामग्री जुटाने में आदरणीय अग्रज डॉ० विद्याधर मिश्र द्वारा की गई सहायता के लिये उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

प्रत्येक आस्थालु भारतीय तीन शास्त्रसम्मत ऋणों का दायित्व अनुभव करता है और उनसे मुक्त होने का यथाशक्ति प्रयास भी करता है। वे ऋण हैं—देवऋण, गुरुऋण तथा पितृऋण ! परन्तु मेरे विचार से आज के युग में विद्या-मन्दिर तथा राष्ट्र का ऋण कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। एक चरित्र-निर्माण-भूमि है तो दूसरी कर्मभूमि ! इस काव्य की संरचना से मैं अपनी चरित्रभूमि, अपने विश्वविख्यात विद्यामन्दिर 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' से अनृण होने का प्रयास कर रहा हूँ।

मेरा काव्य उन हजारों-लाखों स्नातकों का प्रतिनिधित्व करता है जो इस विश्वविद्यालय के प्रति यथाकथञ्चित् समर्पित हैं, जो इससे हार्दिक लगाव रखते हैं। जो इसे स्वार्थसिद्धि की नहीं, आत्मोत्थान की पुण्यस्थली मानते हैं। यदि उन्हें मेरा यह सारस्वत श्रम रुचा तो निश्चय ही मैं स्वयं को कृतार्थ अनुभव करूँगा।

आशीर्वाद के आत्मीयता भरे कुछ शब्द लिखने के लिये मैं अपने उदारमना कुलपति डॉ० मिश्र के प्रति पुनः हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

एकेडमी प्रेस के स्वत्वाधिकारी भाई श्री सुरेन्द्रमणि त्रिपाठी को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, मात्र पन्द्रह दिनों में इस काव्य का सुरुचिपूर्ण मुद्रण सम्पन्न कर देने के लिए !

विनयावनत
अभिराज राजेन्द्रमिश्र

जनवरी ५, १९८७ ई०
८ बाघम्बरी मार्ग, इलाहाबाद।

प्रस्तावनासर्गः

गङ्गाम्बुकज्जलरसेन लिलेख सृष्टिं
पर्णायमानभुवि यत्र वटेन धाता ।
यत्रोदियाय नवसंस्कृतिरश्मिमाली
ज्ञानामृताम्बुदधरः स जयेत् प्रयागः ॥१॥

पत्ते के समान पृथ्वीतल पर वटवृक्षरूपी लेखनी से विधाता ने जहाँ गङ्गा-जलरूपी स्याही से सृष्टि को अङ्कित किया और जहाँ नवसंस्कृति का सूर्य (सर्वप्रथम) उदित हुआ, ज्ञान रूपी अमृत की वर्षा करने वाले उस प्रयाग की जय हो !

सङ्गत्य सर्वककुभां नवदीप्तिजालं
साहित्यगायनकलाकलनाप्रपूतम् ।
विद्योतयत्यखिलविश्वभुवं प्रकामं
विज्ञानदीपशिखया स जयेत् प्रयागः ॥२॥

साहित्य, गायन (संगीत) एवं कला के विस्तार से पवित्रित, दिग्दिगन्तों में व्याप्त नूतन रश्मियों के समूह को बटोर कर, विज्ञान (उत्कृष्ट ज्ञान) रूपी दीपशिखा द्वारा जो समूचे भूमण्डल को भलीभाँति प्रकाशित करता रहा है, उस प्रयाग की जय हो ।

गौराङ्गशङ्करकुमारिलकालिदासैः
संयोजयन्नविरतं ककुभश्चतस्रः ।

सत्यं शिवं सहजसुन्दरतां दधानः
सद्भावमङ्गलकृती स जयेत् प्रयागः ॥३॥

गौराङ्ग महाप्रभु चैतन्यदेव, आदि शंकराचार्य, आचार्य कुमारिलभट्ट तथा कविकुलगुरु कालिदास के माध्यम से (पूर्व-दक्षिण-उत्तर-पश्चिम) चारों दिशाओं को निरन्तर जोड़ता हुआ, सत्य शिव एवं सहज सुन्दरता को धारण करने वाला लोकसद्भाव तथा लोकमङ्गल का धनी प्रयाग धन्य है ।

देवापगा धवलतोयधराऽमृताङ्गी
याङ्गीकृता घनकपर्दगृहे शिवेन ।
मुक्ता भगीरथनिवेदनयाऽत्र नीता
स्फीता कलिन्दतनयामिह संगताऽस्ति ॥४॥

धवल जलराशि को धारण करने वाली देदीप्यमान अमृतमयी सुरसरि जो भगवान् शिव द्वारा (अपने) सघन जटाजूटरूपी गृह में वसाई गई थीं और राजा भगीरथ के निवेदन पर मुक्त की गई थीं—इसी प्रयाग में आकर कलिन्द-नन्दिनी यमुना से संगत होती हैं ।

तप्तं तपोऽत्र विधिना ननु सृष्टिशक्त्यै
विष्णोर्निदेशविधुरेण नरीक्ष्य भावम् ।
अद्यापि यस्य वितनोति पवित्रकीर्तिं
घट्टोऽनुतीरमिह रम्यदशाश्वमेधः ॥५॥

भगवान् विष्णु के अभिप्राय को समझ कर उनके आज्ञापालक ब्रह्मा ने सृष्टि-रचना की सामर्थ्य प्राप्त करने के लिये इसी प्रयागक्षेत्र में तप किया । गङ्गा के तट पर विद्यमान रमणीय दशाश्वमेध घाट आज भी जिसकी पवित्र कीर्ति को बिखेर रहा है ।

कान्तोर्वशीप्रणयसिन्धुनिमग्नचित्तं
भूपोत्तमं किल पुरूरवसं चिराय ।
याऽरीरमद्धिमकरान्वयराजधानी
साऽत्रैव वामपुलिने विकलावशेषा ॥६॥

प्रियतमा उर्वशी के प्रणयसागर में डूबे हृदय वाले श्रेष्ठ भूपति पुरूरवा को जिसने चिरकाल तक रिझाया, चन्द्रवंशी राजाओं की वही राजधानी (प्रतिष्ठानपुरी-झूसी) इसी प्रयाग में (गंगा के) बायें तट पर भग्नावशेषों के रूप में स्थित है।

द्वीपे विशालजलवर्तिनि सन्निवासौ
श्रीवासुकेरथ च वेणिकमाधवस्य।
आस्तां पुराणरचनासु च यौ प्रसिद्धौ
अद्यापि तौ प्रथयतो गरिमाणमूर्ध्वम् ॥७॥

गंगा के विशाल जल में अवस्थित द्वीप (भूखण्ड) पर श्री वासुकि तथा वेणीमाधव का श्रेष्ठ निवास-स्थान (मन्दिर) है। पौराणिक कृतियों में जो प्रख्यात रहे हैं, आज भी वे दोनों (अपनी) उत्कृष्ट गरिमा का प्रकाशन कर रहे हैं।

बन्धो विनिर्मित इहैव दृढाश्मकल्पः
क्रोशद्वयेन विततोऽर्धविधुप्रमाणः।
दुर्गावनाय मुगलेश्वरराजलक्ष्मीं
यातामपि प्रविदधाति हिमावदाताम् ॥८॥

किले की रक्षा के लिए दो कोस लम्बा, मजबूत पत्थर के समान अर्ध-चन्द्राकार बाँध यहीं पर निर्मित किया गया है जो कि मुगलेश्वर शहंशाह अकबर की प्राचीन साम्राज्य-लक्ष्मी को (आज भी) हिम-शुभ्र बना रहा है।

रराज्यते पवनजश्शयितोऽधिबन्धं
प्राणान्दधच्छतगुणानपि मृत्युमुद्रः।
गाङ्गैर्जलैः सकृदपि प्रथिताभिषेको
मेघे कलाविह दृढं विधुनोत्यनास्थाम् ॥९॥

मृत्यु की मुद्रा में (अर्थात् उत्तर दिशा में सिर किये हुए) बाँध के ऊपर सोये हुए (परन्तु) सौगुनी अधिक प्राणवत्ता को धारण करने वाले पवनपुत्र हनुमान् विराजमान हैं। वर्षा ऋतु में गंगाजल से एक बार स्नान करने वाले

भगवान् महावीर इस काल में भी (नास्तिकों की) अनास्था को जर्जर बना रहे हैं।

स्तम्भो नभःस्थशिखरोऽपि समुद्रगुप्त-
काष्ठाजयैकघटनापटुकीर्तिवाही ।
दुर्गे कवीन्द्रहरिषेणपदार्थशय्या-
माख्यापयन्नविरतं कुरुते प्रकाशम् ॥१०॥

कविश्रेष्ठ हरिषेण की शब्दार्थ-समष्टि का निरन्तर यशोविस्तार करने वाला तथा सम्राट् समुद्रगुप्त की दिग्विजय-घटना की प्रखर-कीर्ति का साक्षी गगनचुम्बी पाषाणस्तम्भ भी प्रयाग (इलाहाबाद) के दुर्ग में सुशोभित है।

पारेकलिन्दतनुजं दिशि दक्षिणस्यां
प्रत्नो मठश्श्रयति दीप्तिमरैलनामा ।
गौराङ्गवल्लभसुहृत्त्वललामभूमिः
दीक्षामिताविह नु रूपसनातनौ द्वौ ॥११॥

यमुना के उस पार दक्षिण दिशा में अरैल नामक प्राचीन मठ अवस्थित है जो कि महाप्रभु चैतन्यदेव तथा वल्लभाचार्य की मैत्री की लीलाभूमि है। यहीं पर रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी—इन दोनों भाइयों को गौराङ्ग महाप्रभु ने दीक्षा दी थी।

आगत्य माघसवने ननु कान्यकुब्जात्
सर्वस्वमर्थिनिवहाय मुदा प्रयच्छन् ।
केषां न चारु हृदयं सदयं स चक्रे
श्रीह्वेनसांगमहितो नृपहर्षदेवः ॥१२॥

माघस्नान में (राजधानी) कन्नौज से आकर अपना सब कुछ प्रसन्नतापूर्वक याचकों को लुटा देने वाले, चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा प्रशंसित महाराज श्री हर्षदेव किन लोगों के शोभन हृदय को सदय नहीं बना देते थे ?

ख्यातो नृपः कलचुरीकुलजः प्रवृद्धो
गाङ्गेयदेवपदभाक् स हि कर्णदेवः ।

प्राणान्हो स्थगयितुं ससुखं सिषेवे
पूतां प्रयागवसुधां वसुधाधिपेन्द्रः ।।१३।।

कलचुरी-वंश में उत्पन्न राजर्षिश्रेष्ठ, लोकप्रख्यात श्री गाङ्गेय कर्णदेव भी वृद्धावस्था में (तीर्थ में ही) प्राणत्याग करने की इच्छा से पवित्र प्रयाग-भूमि की सेवा करते रहे।

के नाम हन्त ! रघुनाथयुधिष्ठिराद्या
मोक्षप्रदं सुभगयामुनगाङ्गसङ्गम् ।
नैवाययुर्न ददृशुश्चिरमध्वनीना
मीनायिता न मुनयोऽत्र जलेऽभवन्के ।।१४।।

यात्रा के प्रसंग में भला श्रीराम एवं युधिष्ठिर प्रभृति कौन पुरुष-श्रेष्ठ मोक्षप्रद इस रमणीय गंगा-यमुना के संगम पर नहीं आये ? किन्होंने प्रयाग का दर्शन नहीं किया अथवा प्रयाग के गंगाजल में कौन ऋषि-मुनि मीन नहीं बन गये ?

भूभृद्गतागतविभावनशून्यचित्ता
सैन्यप्रचारविरला च विवादमुक्ता ।
सौराज्यरञ्जितपदा प्रबभूव सेयं
विद्यातपश्चरितसंस्कृतिराजधानी ।।१५।।

(युद्धोन्मुख) राजाओं की आवाजाही के अनुभव से शून्य चित्त वाली, सेनाओं की मुठभेड़ से रहित, विवादों से मुक्त तथा सुख-शान्ति से अनुरञ्जित क्षेत्र वाली यह नगरी (सदैव) विद्या, तपस्या, चरित्र तथा संस्कृति की राजधानी रही।

को नाम वेद यदिहैव नदत्तरङ्गा
गङ्गा कलिन्दतनयापरिरम्भमेति ?
ख्यातस्त्रिलोकपरिधौ नियतेर्नियोगा-
द्यस्माद्बभूव नितरामचिरात्प्रयागः ।।१६।।

कौन जानता था कि गरजती लहरों वाली गंगा रवितनया यमुना से यहीं गलबाँही करेगी ? यह नियति का विधान ही था कि त्रिलोक-परिधि में इसी एक घटना के कारण प्रयाग चिरकाल से ही निरन्तर प्रख्यात रहा ।

गोस्वामिना तुलसिनाऽपि सुरापगायाः
अत्रैव पूतपुलिने मसृणाङ्कुराभः ।
मौढ्यप्रपञ्चनिहतास्थजनोपकृत्यै
क्लृप्तः कदापि शुभरामकथावतारः ।।१७।।

मूढता के विस्तार से मरी हुई आस्था वाले भारतवासियों का उपकार करने के लिये इसी प्रयाग में सुरापगा गंगा के पावन तट पर गोस्वामी तुलसीदास ने कभी कोमल अंकुर के समान राम-कथा का अवतरण कल्पित किया ।

पुत्रेष्टिदर्शपितृनिर्जरपौर्णमास-
सोमैर्गवामयनशंसितवाजपेयैः ।
व्योमाऽत्र धूमनिचयैर्निहतान्तरालै-
राच्छादितं समवलोकि मखैरसंख्यैः ।।१८।।

पुत्रेष्टि, दर्श, पितृयाग, देवयाग, पौर्णमास, सोमयाग, गवामयन तथा प्रशंसनीय वाजपेय आदि अगणित यज्ञों के आकाशाच्छादक धूम-समूहों से (कभी) तीर्थराज प्रयाग का वातावरण व्याप्त रहा करता था ।

अज्ञानगूढतिमिरौघविनाशदीक्षा-
शिक्षापटुर्जयति मान्यमुनिर्यतीन्द्रः ।
यस्याश्रमे रघुवरोऽपि वनान्तयात्री
पात्रीबभूव महितातिथिसत्क्रियाणाम् ।।१९।।

अज्ञानरूपी गहन अन्धकार-समूह को विनष्ट करने की इच्छा एवं कला में निपुण लोकवंद्य उन महर्षि भारद्वाज की जय हो जिनके (प्रयागस्थ) आश्रम में वनभूमि के यात्री भगवान् राम ने भी पूज्य अतिथियों के योग्य पहुनाई प्राप्त की ।

व्याख्याभिरत्र ककुभो गमिताः प्रसादं
ब्रह्माश्रयाभिरथ सृष्टिकलान्विताभिः ।
को निश्चिनोति विजयं प्रथते भरद्वा-
जोद्धाऽथवा मतिमतां धुरि याज्ञवल्क्यः ॥२०॥

सृष्टि-रचना अथवा ब्रह्मनिरूपण से सम्बद्ध व्याख्याओं द्वारा तीर्थराज प्रयाग की दिशायें निर्मल हो उठी थीं । विजय का निश्चय भला कौन करता (कहना कठिन था कि) सचमुच महामुनि भरद्वाज श्रेष्ठ हैं, अथवा मतिमानों में अग्रणी महर्षि याज्ञवल्क्य ?

विद्याकलासृतिरियं प्रथिता पुराणी
विच्छेदमाप न ततःप्रभृति प्ररूढा ।
अद्यापि तद्विजयदत्तमतो यतो हि
विद्यालयस्सततमश्चति विश्वविद्याम् ॥२१॥

उसी समय (अर्थात् त्रेतायुग) से प्रचलित विद्या और कला की वह लोक-प्रख्यात प्राचीन परम्परा कभी विच्छिन्न नहीं हुई क्योंकि उस परम्परा के उत्तरोत्तर उत्कर्ष में लीन प्रयाग विश्वविद्यालय आज भी समस्त विद्याओं का अनवरत विस्तार कर रहा है ।

खिस्ताब्दके नु ऋषिवाणफणीन्द्रयुक्ते
स्वातन्त्र्यघोरसमरे स्मृतिसम्प्ररूढे ।
विक्टोरियामहसि याति दृढ़प्रतिष्ठे
निष्ठेयमांग्लजनुषां हृदयेषु जाता ॥२२॥

ऋषि (=७) वाण (=५) फणी (=८) इन्दु (=१) अर्थात् १८५७ ई० में जब भयानक स्वाधीनता-संग्राम स्मरणीय बनने लगा था और भारत में महारानी विक्टोरिया के प्रताप की सुदृढ़ प्रतिष्ठा हो चुकी थी—अंग्रेजों के मन में यह भावना उत्पन्न हुई ।

अत्रापि किन्नु खलु केम्ब्रिजमाक्सफोर्ड
संस्थाप्यते सपदि शासनतन्त्रसिद्ध्यै ?

येनोच्चशिक्षणयुता निहिताधिकाराः
स्वाम्यं वहन्तु सुदृढं नतभारतीयाः ॥२३॥

शासन-तन्त्र की सफलता के लिए भारत में ही केम्ब्रिज तथा आक्सफोर्ड की संस्थापना यथाशीघ्र क्यों नहीं की जाती ? जिससे कि उच्च-शिक्षा से सम्पन्न राजभक्त भारतीय, अधिकृत पदों पर बैठ कर 'आफीसरी' कर सकें !

तेषामपि व्रिटिशशासनतन्त्ररीतिः
स्यादांग्लवेषरचना वचनावली च ।
भक्तिश्च यूनियनजैकगतिं प्रति स्यात्
अस्माकमस्ति विकटां प्रति यादृशी सा ॥२४॥

उन भारतीय अफसरों की भी वेशभूषा, बोलने-चालने का ढङ्ग तथा शासन करने की पद्धति ब्रीतानियों जैसी हो । यूनियन जैक की गति में उनकी भी वैसी ही निष्ठा हो जैसी हम लोगों की है महारानी विक्टोरिया के प्रति !

शान्ते विरोधनिवहे सुलभावकाशाः
कर्तुं यथारुचि वयं सकलं समर्थाः ।
शिक्षाप्रचारकरणं प्रभवेत्तदाद्यं
सुप्तं हि येन नवजागरमेतु राष्ट्रम् ॥२५॥

विरोध का वातावरण शान्त हो जाने पर, समुचित अवसर पाकर, हम लोग अपनी रुचि के अनुसार सब कुछ कर सकने में समर्थ होंगे । तो फिर सर्वप्रथम शिक्षा का प्रचार ही किया जाय ताकि सोया हुआ भारतराष्ट्र नई जागृति को प्राप्त कर सके ।

इत्थं विचिन्त्य मनसा व्रिटिशेश्वरास्ते
राष्ट्रस्थभूपतिनवाबसहायताभिः ।
संकल्पनां विदधुरद्भुतविश्वविद्या-
गेहं प्रयागनगरे झटिति प्रयोक्तुम् ॥२६॥

उन ब्रिटेनवासी शासकों ने मन में इस प्रकार सोच-विचार कर, भारत-बासी राजाओं तथा नवाबों की आर्थिक सहायता से प्रयाग नगर में यथाशीघ्र एक बेजोड़ विश्वविद्यालय संस्थापित करने का संकल्प किया।

एवं पूर्तिमगाच्चिरन्तनसृतिः सारस्वती प्राक्तनी
गङ्गासूर्यसुतासुसङ्गमभुवि प्रायेण नव्योद्भवा।
संकल्पैः स्थिरतां ययौ नयविदां यद् विश्वविद्यागृहं
तज्जातं ननु मङ्गलाय विदुषां राष्ट्रेऽनघे भारते ॥२७॥

गङ्गा और यमुना की संगमस्थली पर प्रायः प्रथम बार वह पुराणयुगीन विद्या की शाश्वत परम्परा इस प्रकार (अर्थात् विश्वविद्यालय के रूप में) पूर्ति को प्राप्त हुई। नीतिविदों के संकल्पों से जो विश्वविद्यालय स्थापित हुआ निष्पाप भारत राष्ट्र में वह निश्चित रूप से विद्वज्जनों के कल्याण का हेतु सिद्ध हुआ।

मद्रासे कलिकातनाम्नि नगरे संस्थापितो योऽभवत्
मुम्बय्याञ्च बुधैकचारुनिलयो विद्यालयश्शासकैः।
पुण्ये तीर्थपतौ प्रयागनिगमे नव्यावतारो ह्ययं
तस्यैव प्रसभं वभूव विमुदे विद्याजुषां भारते ॥२८॥

मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई में विद्वज्जनों का आश्रयभूत जो विश्व-विद्यालय ब्रिटिश शासकों द्वारा पहले स्थापित किया गया था, पवित्र तीर्थराज प्रयाग नगर में उसी का यह नया अवतरण था जो कि भारत राष्ट्र में विद्या-व्यसनियों के महान् हर्ष का हेतु बना।

भवतु ननु चतुर्थः स्थापनाकालदृष्ट्या
भरतभुवि महार्घः काममेवाश्रमोऽयम्।
गुरुकुलपरिपाटीं वर्तयन् किन्तु राष्ट्रे
प्रथमतम उदात्तो विश्वविद्यालयोऽयम् ॥२९॥

स्थापना-काल की दृष्टि से यह श्रेष्ठ विद्याश्रम भले ही भारत में चतुर्थ स्थान पर आये परन्तु राष्ट्र में गुरुकुल-परम्परा का प्रवर्तन करने वाला यह सर्वप्रथम महान् विश्वविद्यालय (Residential University) है।

मासे सितम्बराख्येऽस्मिन् त्रयोविंशतिके दिने
नगनागरसेन्द्वब्दे खिृस्तके भौमवासरे ॥३०॥
विश्वविद्यालयस्यायं शतवर्षमहोत्सवः।
संयोज्यते महानन्दश्छात्रशिक्षकशासकैः ॥३१॥

नग (=७) नाग (=८) रस (=९) इन्दु (=१) अर्थात् १९८७ ई०[1] के प्रस्तुत सितम्बर मास की तेईसवीं तारीख मंगलवार को विश्वविद्यालय का शताब्दी-समारोह छात्रों, शिक्षकों तथा प्रशासकों (अर्थात् कुलपति एवं राज्यसरकार) द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रो देववाणीप्रवाचकः।
महोत्सवमिमं रम्यं सम्भूषयति सद्गिरा ॥३२॥

संस्कृत-विभाग में रीडर-पद पर अभिषिक्त अभिराज डॉ० राजेन्द्र मिश्र (कवि) इस स्मरणीय महोत्सव को (अपनी) संस्कृत कविता से सम्भूषित कर रहा है।

इति श्रीमदभिराजराजेन्द्रविरचिते

॥ विश्वविद्यालयशताब्दीकाव्ये प्रस्तावनासर्गः ॥

☐

१. 'अंकानां वामतो गतिः' अर्थात् अंकों की गणना बायें से होती है। जो अंक दाहिने हैं वे क्रमशः बाईं ओर जायेंगे।

संस्थापनासर्गः

जन्वर्याख्यस्य मासस्य षड्विंशतितमे दिने ।
ख्रिस्ताब्दे च ग्रहरसनागाम्बरमिते शुभे ॥१॥
आगरानगरे रम्ये संयोजितमहोत्सवे ।
डयूक् ऑव एडिनवर्गस्य स्वागतार्थं प्रशासकैः ॥२॥
अघोषयद्धि राजाज्ञां लेफ्टिनेण्टो गवर्नरः ।
इलाहाबादनगरे विश्वविद्यालयं मुदा ॥३॥

छब्बीस जनवरी १८६९ ई० के दिन डयूक् ऑव एडिनवर्ग के स्वागत में शासन द्वारा आगरानगर में आयोजित महोत्सव में लेफ्टिनेण्ट गवर्नर ने प्रसन्नतापूर्वक इलाहाबाद में विश्वविद्यालय-स्थापना की राजाज्ञा घोषित की ।

खर्षिभोगिविधुप्रख्ये ख्रिस्ताब्दे च ततः परम् ।
प्रारूपं म्योरकेन्द्रस्य विज्ञापितमभून्नवम् ॥४॥

इसके अनन्तर १८७० ई० में म्योर सेण्ट्रल कालेज का नवीन प्रारूप विज्ञापित हुआ ।

युग्मर्षिभोगीन्दुमिते ख्रिस्तवर्षे शुभोदये ।
दिनाङ्के प्रथमे मासे जुलाय्याख्ये मनोरमे ॥५॥
इलाहाबादकालेजनाम्ना ख्यातं प्रवर्तितम् ।
विश्वविद्यैकसंस्थानं सर्वप्रथममञ्चितम् ॥६॥

दरभङ्गाकैंसिलाख्ये निवेशे शान्तक्रन्दने ।
अध्यापनं समारब्धं चिरकालाभिकांक्षितम् ।।७।।

शान्त वातावरण वाले दरभंगा कैंसिल नामक क्षेत्र में सर्वप्रथम इलाहाबाद कालेज के नाम से प्रसिद्ध एक गरिमामय विश्वविद्या-संस्थान १८७२ ई० की मनोरम जुलाई में पहली तारीख को स्थापित किया गया तथा (जनता द्वारा) चिरकाल से अभिकांक्षित अध्यापन प्रारम्भ हो गया ।

प्राग्रूपं म्योरकेन्द्रस्य मध्य एव प्रकल्पितम् ।
दक्षस्थपतिना रम्यं ईमर्संनयशस्विना ।।८।।

इसी बीच में म्योर सेण्ट्रल कालेज की स्मरणीय रूप-रेखा प्रख्यात भवन-शिल्पी यशस्वी ईमर्सन द्वारा बना ली गई ।

नवत्या च सहस्राणामष्टलक्षैश्च रूप्यकैः ।
इदं द्वादशभिर्वर्षैर्विद्यास्थानं विनिर्मितम् ।।९।।

आठ लाख नब्बे हजार रुपयों के व्यय से यह महाविद्यालय बारह वर्षों में निर्मित हुआ ।

दर्शनीयमिदं वेश्म समुद्घाटितमुत्तमम् ।
लार्डडफरिनसंज्ञै रांग्लसाम्राज्यरक्षकैः ।।१०।।

ब्रिटिश- साम्राज्य के रक्षक लार्ड डफरिन द्वारा यह दर्शनीय, उत्तम विद्याभवन समुद्घाटित किया गया ।

रसाहिनागव्योमाङ्के ख्रिस्तवर्षेऽष्टमे दिने ।
अध्यापनं समारब्धं ज्ञानगौरवमण्डितम् ।।११।।

आठ अप्रैल १८८६ ई० को ज्ञानगरिमा से मण्डित अध्यापन-कार्य (इस विद्यालय में) प्रारंभ हो गया ।

ततः सेप्टेम्बरे मासे त्रयोविंशतिके दिने ।
मुनिनागाहिचन्द्राङ्के ख्रिस्तवर्षे प्रशासकैः ।।१२।।
पारितश्चाधिनियमो नूतनः सर्वसम्मतः ।
र्वसिटीऐक्टसंज्ञो यो ज्ञायते सर्वशिक्षितैः ।।१३।।

इसके अनन्तर १८८७ ई० की तेईसवीं सितम्बर को शासनाधिकारियों ने सर्वसम्मत नया अधिनियम पारित किया जो सभी पढ़े-लिखे लोगों द्वारा 'यूनिवर्सिटी ऐक्ट' के नाम से जाना गया।

नवम्बरे पञ्चदशे आद्यदीक्षान्तभाषणम्।
तस्मिन्नेव हि ख्रिस्ताब्दे युक्तप्रान्तगवर्नरः ॥१४॥
चांसलरपदमारूढो ददौ प्रायोजितोत्सवे।
विद्यया मेधया ख्यातो लायलोऽल्फ्रेड्कर्मिसकः ॥१५॥

१८८७ ई० के ही १५ नवम्बर को आयोजित समारोह में संयुक्त प्रान्त (आगरा एवं अवध) के गवर्नर, चाँसलर-पद पर अधिष्ठित, विद्या एवं प्रतिभा के धनी अल्फ्रेड कर्मिस लायल ने प्रथम दीक्षान्त-भाषण दिया।

द्वीपनागाहिचन्द्राङ्के मार्चमासे परीक्षणम्।
स्नातकोत्तरकक्षाणामादिमं समजायत ॥१६॥
पटियालाऽजमेरादिदूरदेशनिवासिनः।
छात्राः परीक्षिता आसन् ज्ञानविज्ञानकांक्षिणः ॥१७॥

पटियाला तथा अजमेर आदि दूरस्थ प्रान्तों में रहने वाले, ज्ञान-विज्ञान के पिपासु छात्र परीक्षित हुए। मार्च १८८९ ई० में स्नातकोत्तरकक्षाओं की पहली परीक्षा सम्पन्न हुई।

सिन्धुव्योमरसेन्द्वाख्ये क्षेत्रं जातं सुनिश्चितम्।
विश्वविद्यालयो येन महिमानं परं ययौ ॥१८॥

१९०४ ई० में यूनिवर्सिटी का प्रभावक्षेत्र निश्चित कर दिया गया। इससे विश्वविद्यालय की गरिमा और बढ़ गई।

व्योमरामाहियुग्मेषुदिङ्मितं वर्गमीलकम्।
क्षेत्रं नियोजितं विश्वविद्यालयशिरस्यभूत् ॥१९॥
जनानां नवकोटीनां प्रातिनिध्यं प्रपूरयन्।
अयं मध्योत्तरप्रान्तं मरुभूमिञ्च मम्बभौ ॥२०॥

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का अधिकार-क्षेत्र व्योम (=०) राम (=३) अहि (=८) युग्म (=२) इषु (=५) दिक् (=४) अर्थात् चार लाख बावन हजार आठ सौ तीस वर्गमील विस्तृत हो गया। नौ करोड़ राष्ट्रवासियों का प्रतिनिधित्व करने वाला यह विश्वविद्यालय संयुक्तप्रान्त, मध्यभारत तथा राजपूताना को अलंकृत करने लगा।

अद्रियुग्मरसेन्द्वाख्यात् ख्रिस्ताब्दात्पूर्वमेव हि।
अनेनासन्नु सम्बद्धा महाविद्यालयाः परे ॥२१॥
अष्टात्रिंशन्मितास्ते तु संख्यया दूरवर्तिनः।
इन्दौरादिप्रदेशेषु प्रकामं शिक्षणे रताः ॥२२॥

इन्दौर आदि प्रदेशों में उच्चकोटि के शिक्षण में निरत दूर-दराज के अड़तीस महाविद्यालय १९२७ ई० के पूर्व ही इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे।

जन्वर्याख्यस्य मासस्य तिथौ सप्तदशाङ्किते।
अम्बरेन्दुग्रहेन्द्वब्दे जॉन हीवेट् महोदयः ॥२३॥
सीनेटहॉलसंज्ञस्य शिलान्यासमचीकरत्।
आस्थानमण्डपस्यासौ चांसलरपदाभिधः ॥२४॥

चांसलर-पद पर अधिष्ठित जॉन हीवेट महोदय ने सीनेट हाल नामक आस्थानमण्डप (हाल) का शिलान्यास १७ जनवरी १९१० ई० को सम्पन्न किया।

शासनेनानुदानस्य भूरिराशिर्विनिश्चितः।
यो हि पञ्चचत्वारिंशत्सहस्रेणान्वितोऽभवत् ॥२५॥

शासन द्वारा अनुदान की बड़ी धनराशि निश्चित की गई जो कि पैंतालीस हजार रुपयों की थी।

लक्षत्रयं पुनर्दत्तं विकासाय ततः परम्।
विश्वविद्यालयो येन क्षिप्रमेव श्रियं दधे ॥२६॥

इसके अनन्तर शासन ने विश्वविद्यालय के विकासार्थ तीन लाख रुपये पुनः दिये जिससे यह विश्वविद्यालय शीघ्रतापूर्वक विकसित होने लगा।

युग्मयुग्मरसेन्द्वाख्ये ख्रिस्तवर्षे प्रशासकैः ।
पुनः संघटितो जातः ख्यापनार्थं दृढव्रतैः ॥२७॥

१६२२ ई० में सुदृढ़ संकल्प वाले शासनाधिकारियों द्वारा प्रसिद्धि पाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय पुनः संघटित किया गया।

छात्राणां युग्मसाहस्री शतेनाष्टादशेन च ।
प्राज्याऽभून्मुनिरामाख्ये ख्रिस्तवर्षे गरीयसी ॥२८॥

सन् १६३७ ई० में छात्रों की संख्या दो हजार एक सौ अठारह से भी अधिक हो गई।

वर्षे नागशरख्याते हीरकाख्यमहोत्सवे ।
बभूव सप्तसाहस्री सैव संख्या महीयसी ॥२६॥

सन् १६५८ ई० में हीरकजयन्ती (Diamond Jubilee) के अवसर पर यही छात्रसंख्या विशाल अर्थात् सात हजार हो गई।

शताब्द्युत्सववेलायां साम्प्रतं मुनिदिङ्मिते ।
सैव विंशतिसाहस्री जाता यद्वा ततोऽधिका ॥३०॥

और अब सन् १६८७ ई० में शताब्दी-महोत्सव की घड़ी में वही संख्या बीस हजार अथवा उससे अधिक हो गई है।

यद्धि लैटिनभाषायां ख्यातं रम्यं सुभाषितम् ।
सचित्रं कोट रामी टाट् आर्वोरससमन्वितम् ॥३१॥
यच्च वेदेषु संघुष्टं तद् बभूव निदर्शनम् ।
जातं जातं प्रतिशाखं बभूवेति पदक्रमैः ॥३२॥
तमेव ननु दृष्टान्तं नाटयन् निजवैभवैः ।
विश्वविद्यालयस्सोऽयं परां ख्यातिं समाश्रितः ॥३३॥

'कोट रामी टॉट आर्वोरस'—शब्दावली से युक्त जो प्रसिद्ध रमणीय सुभाषित लैटिन भाषा में प्रचलित था और 'जातं जातं प्रतिशाखं बभूव' पदविन्यास

द्वारा जो सुभाषित वेदों में (ऋषियों द्वारा) घोषित किया गया था—वही इस विश्वविद्यालय का अनुकरणीय आदर्श बना। अपने वैभवों से उसी दृष्टान्त को चरितार्थ करता हुआ यह विश्वविद्यालय श्रेष्ठ यश प्राप्त कर चुका है।

ज्ञानविज्ञानमाहात्म्यैः विद्याविनयसम्पदा।
मानवोचितसंस्कारचारित्र्यैश्च गुणान्वितैः ॥३४॥
शिक्षयन् छात्रसम्मर्दं राष्ट्रवृद्धिञ्च सन्दधत्।
विश्वविद्यालयोऽद्यापि सोऽयं मूर्धन्येव वर्तते ॥३५॥

ज्ञान-विज्ञान की महिमा से, विद्या और विनय की सम्पत्ति से, गुणों से संपृक्त मानवोचित संस्कारों तथा चरित्रों से छात्र-समुदाय को प्रशिक्षित करता हुआ एवं राष्ट्र के अभ्युदय को बढ़ाता हुआ यह प्रयाग विश्वविद्यालय आज भी शिखरारुढ़ है।

कदाचित्कौमार्यं निरतिशयबाल्याद् विरहितं
ततः पौगण्डत्वं तदुपरि युवत्वं मधुमयम्।
ततोऽप्यूर्ध्वं प्रौढिः प्रभवति समेषां रुचिकरी
क्रमोऽयं कालस्य श्रयति धरणीं लोकतरणीम् ॥३६॥

कभी, निहायत बचपन से पृथक् भूत कुमारावस्था, उसके बाद पौगण्डावस्था और उसके बाद मिठास भरा यौवन! उसके भी बाद रुचिकरी प्रौढ़ावस्था सभी को प्रभावित करती है। लोकतरणीभूत पृथ्वी को काल का यही क्रम प्राप्त होता है।

प्रसुप्तं सद्बीजं प्रथममिह भूमावपि यथा
क्रमेणैवोत्सूते शिखरदलशाखादिनिचयम्।
तथैवेदं विद्याभवनपि नित्यं प्रतनुते
विकासप्रस्तारं सुमतिमणिहारं नवनवम् ॥३७॥

जैसे इस धरागर्भ में सोया हुआ समर्थ बीज क्रम से ही अंकुर, पत्र एवं शाखादि के समूह को उत्पन्न करता है ठीक उसी प्रकार यह विश्वविद्यालय भी नित्य-नूतन, सद्बुद्धि रूपी मणियों के हारभूत, विकास के प्रस्तार को जन्म दे रहा है।

इतिश्रीमदभिराजराजेन्द्रविरचिते

॥ विश्वविद्यालयशताब्दीकाव्ये संस्थापनासर्गः ॥

संगणनासर्गः

मुनिनागाहिचन्द्राङ्के ख्रिस्तवर्षे शुभोदये ।
सर जॉन् एजनामाऽसौ कौलपत्यश्रियं दधे ॥१॥

मंगलमय सन् १८८७ ई० में सर जॉन एज ने (इलाहावाद यूनिवर्सिटी के) कुलपति की गरिमा को धारण किया ।

दग्रसाहिविधुप्रख्ये ततस्टी० कॉनलेन् सुधीः ।
जातः कुलपतिः श्रीमान् सी० आइ० ई० विभूषितः ॥२॥

इसके अनन्तर सन् १८६४ ई० में विद्वद्वरेण्य श्रीमान् टी० कॉनलेन् सी० आई० ई० कुलपति नियुक्त हुए ।

ततः परं न्यायपतिः ऐकमैकमहोदयः ।
अहिद्वीपाहिचन्द्राङ्के जातः कुलपतिर्नवः ॥३॥

उसके बाद सन् १८६८ ई० में जस्टिस ऐकमैक महोदय (विश्वविद्यालय के) नवीन कुलपति हुए ।

खयुग्मरसेन्दुमिते पुनर्न्यायपतिर्महान् ।
जार्जनाक्सो नियुक्तोऽभूत्कौलपत्यसमृद्धये ॥४॥

सन् १६०० ई० में पुनः विख्यात न्यायविद् जार्ज नाक्स कुलपति पद की श्रीवृद्धि के लिए नियुक्त हुए ।

पण्डितस्सुन्दरलालो बभूव विधिकोविदः ।
कृत्तिकाभ्ररसेन्द्वाख्ये भारतीयः कुलप्रभुः ॥५॥

सन् १९०६ ई० में विधिशास्त्र के मर्मज्ञ पण्डित सुन्दरलाल (सर्वप्रथम) भारतीय कुलपति नियुक्त हुए ।

अहिव्योमरसेन्द्वाख्ये ऐकमैनमहोदयः ।
कौलपत्यपदं भेजे पुनरप्यात्मवान् सुधीः ॥६॥

सन् १९०८ ई० में एक बार फिर विद्वद्वरेण्य महामना ऐकमैन महोदय ने कुलपतित्व का दायित्व सँभाला ।

रिचर्ड्सो हेनरी जार्जो रसव्योमरसेन्दुके ।
ततश्च सुन्दरलालो युग्मचन्द्ररसेन्दुके ॥७॥

सन् १९०९ ई० में हेनरी जार्ज रिचर्ड्स तथा सन् १९१२ ई० में पण्डित सुन्दरलाल कुलपति नियुक्त हुए ।

प्रमदाचरणबैनर्जी बभूव विदुषां वरः ।
अद्रिचन्द्ररसेन्द्वाख्ये खिृस्तवर्षे कुलाधिपः ॥८॥

सन् १९१७ ई० में विद्वदग्रणी प्रमदाचरण बैनर्जी कुलपति नियुक्त हुए ।

थ्योडोरपीगाटकैरो रसेन्दुरसचन्द्रके ॥
व्योमयुग्मरसेन्द्वाख्ये प्रसादोपाह्वगोकुलः ॥९॥

सन् १९१९ ई० में थियोडोर कैरो पीगाट तथा सन् १९२० ई० में (जस्टिस) गोकुलप्रसाद (कुलपति हुए) ।

क्लॉड डिल्ला फोसाख्यः पदं रूढस्ततः परम् ।
युग्मयुग्मरसेन्द्वाख्ये खिृस्तवर्षेऽप्युदारधीः ॥१०॥

इसके अनन्तर सन् १९२२ ई० में उदार-बुद्धि सर क्लॉड डि ला फोस् कुलपति-पद पर आरूढ़ हुए ।

महामहोपाध्यायश्च गङ्गानाथो विशारदः ।
रामयुग्मरसेन्द्वब्दे कौलपत्यश्रियं दधे ॥११॥

पण्डितवर्य महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ झा ने सन् १९२३ ई० में कुल-पतित्व की गरिमा धारण की ।

युग्मरामरसेन्द्वब्दे गुर्टूश्च पण्डिताग्रणीः ।
नारायण इकबालो गङ्गानाथोत्तराधिकृत् ॥१२॥

सन् १९३२ ई० में पण्डिताग्रणी पं० इकबालनारायण गुर्टू गंगानाथ झा के उत्तराधिकारी (नियुक्त हुए) ।

नागरामरसेन्द्वब्दे ज्ञानविज्ञानमण्डितः ।
डाक्टरोऽमरनाथोऽसौ कुलस्वाम्यमुपागतः ॥१३॥

सन् १९३८ ई० में ज्ञान-विज्ञान के धनी, सुप्रसिद्ध डॉ० अमरनाथ झॉ कुलपति-पद पर आरूढ़ हुए ।

अद्रिसिन्धुरसेन्द्वब्दे ताराचन्दस्ततः परम् ।
दक्षिणारञ्जनो भट्टाचार्यो रसदिगाह्वये ॥१४॥

तदनन्तर, सन् १९४७ ई० में डॉ० ताराचन्द और सन् १९४९ ई० में दक्षिणा रञ्जन भट्टाचार्य (कुलपति नियुक्त हुए) ।

बैनर्ज्यमूल्यचन्द्रश्च युग्मबाणरसेन्दुके ।
मैथिलो भैरवो नाथो बाणबाणरसेन्दुके ॥१५॥

प्रो० अमूल्यचन्द्र बनर्जी सन् १९५२ ई० में तथा मैथिल श्री भैवरनाथ झा सन् १९५५ ई० में (कुलपति नियुक्त हुए) ।

अद्रिबाणरसेन्द्वब्दे कौलपत्यपदं दधे ।
श्रीरञ्जनसुसंज्ञोऽसौ धीरो मतिमतां वरः ॥१६॥

विद्वज्जनों में श्रेष्ठ, धीर-गम्भीर डॉ० श्रीरञ्जन ने सन् १९५७ ई० में कुलपतित्व-पद धारण किया।

न्यायाधीशो नयज्ञोऽसौ पी० के० कौलेतिसंज्ञितः।
कौलपत्यपदं भेजे विधुस्वादरसेन्दुके ॥१७॥

सन् १९६१ ई० में नीतिवेत्ता जस्टिस पी० के० कौल ने कुलपति के पद को सँभाला।

बलभद्रप्रसादोऽपि तस्मिन्नेवाब्दकेऽभवत्।
स्थायी कुलपतिः श्रीमान् विद्वान् स्वनिर्णये दृढ़ः ॥१८॥

उसी सत्र में विद्वद्वरेण्य तथा अपने निर्णयों पर अटल रहने वाले श्रीमान् डॉ० बलभद्र प्रसाद भी स्थायी कुलपति नियुक्त हुए।

शरस्वादरसेन्द्वब्दे नेहरूकुलजस्सुधीः।
श्रीमान् रत्नकुमाराख्योऽभूदत्र स्वकुलाग्रणीः ॥१९॥

सन् १९६५ ई० में नेहरू-वंश में उत्पन्न विद्वान् श्रीमान् रत्नकुमार नेहरू जी यहाँ (प्रयाग वि० वि० में) कुलपति हुए।

नागस्वादरसेन्द्वब्दे ए० बी० लालो महामनाः।
चन्द्राचलरसेन्द्वब्दे भाटिया चन्द्रमोहनः ॥२०॥

सन् १९६८ ई० में महामना प्रो० अवधविहारी लाल तथा सन् १९७१ ई० में श्री चन्द्रमोहन भाटिया (कुलपति हुए)।

युग्माचलरसेन्द्वाख्ये खिृस्तवर्षे नियोजितः।
बाबुरामाख्यसक्सेनो नीतवानवधिं लघुम् ॥२१॥

सन् १९७२ ई० में नियुक्त किये गये डॉ० बाबूराम सक्सेना थोड़े समय तक कुलपति रहे।

ततो रामसहायाख्यः कौलपत्यमुपाश्रितः ।
रामाचलरसेन्द्वब्दे शिक्षकाणामतिप्रियः ।।२२।।

इसके अनन्तर सन् १९७३ ई० में शिक्षकों के अत्यन्त प्रिय श्री रामसहाय जी कुलपति-पद पर आसीन हुए ।

प्रयागदासो हज्जेला आजगाम ततः परम् ।
कृत्तिकाद्रिरसेन्द्वब्दे खिृस्तीये पूर्वसंस्तुतः ।।२३।।

उसके वाद सन् १९७६ ई० में चिर-परिचित डॉ० पी० डी० हजेला (कुलाति के रूप में) आये ।

आद्याप्रसादमिश्रोऽसौ विद्याबुद्धिविचक्षणः ।
रसाद्रिग्सचन्द्राख्ये नियुक्तोऽधीतिवल्लभः ।।२४।।

सन् १९७९ ई० में विद्या एवं बुद्धि से श्रीमण्डित तथा विद्यार्थी-समुदाय में लोकप्रिय प्रख्यात विद्वान् डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र (कुलपति) नियुक्त हुए ।

ततः खाहिरसेन्द्वब्दे लेभेऽभ्युदयमात्मवान् ।
विद्वान् मनस्विमूर्धन्यः सिंहो नारायणोदितः ।।२५।।

तत्पश्चात् सन् १९८० ई० में मनस्वियों में अग्रगण्य श्रेष्ठ गणितज्ञ तथा सत्त्वशील डॉ० उदितनारायण सिंह ने अभ्युदय प्राप्त किया ।

रामनागरसेन्द्वब्दे बहुज्ञो बुधसम्मतः ।
गोविन्दचन्द्रपाण्डेयः कौलपत्यप्रथां गतः ।।२६।।

सन् १९८३ ई० में बहुश्रुत एवं विद्वज्जनों में समादृत डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय कुलपति-पद की प्रसिद्धि के भाजन बने ।

सिन्धुनागरसेन्द्वाख्ये खिृस्तवर्षे समागतः ।
रामेश्वरप्रसादोऽसौ मिश्रो विद्वद्वशंवदः ।।२७।।

विश्वविद्यालयः सम्यक् कायाकल्पं ह्युपागमत् ।
यस्मिन्नवति सौभाग्यं सम्मानं भूरिबृंहणम् ॥२८॥

सन् १९८४ ई० में विद्वज्जनों के वशंवद (हमारे वर्तमान कुलपति) डॉ० रामेश्वरप्रसाद मिश्र नियुक्त हुए जिनकी संरक्षण-अवधि में विश्वविद्यालय ने सौभाग्य, सम्मान तथा प्रभूत विस्तार प्राप्त किया । अथवा यह कहें कि काया-कल्प हो गया विश्वविद्यालय का ।

विभागः स्थापितो येन समाजशास्त्रसंज्ञितः ।
कृता संगीतशास्त्रेऽपि परास्नातकदेशना ॥२९॥

डॉ० मिश्र ने समाजशास्त्र (Sociology) का नया विभाग स्थापित किया और संगीतशास्त्र में भी पोस्टग्रेजुएट स्तर तक शिक्षा की व्यवस्था की ।

पत्राचारविधिर्यत्नैर्यस्य सर्वोपरि स्थितः ।
छायाचित्रादिडिप्लोमाकक्षाश्चापि प्रवर्तिताः ॥३०॥

डॉ० मिश्र के प्रयत्नों से विश्वविद्यालय में (आज) पत्राचार-पाठ्यक्रम-विधि उन्नति की पराकाष्ठा पर जा पहुँची है । फोटोग्राफी आदि की डिप्लोमा कक्षायें भी चलने लगी हैं ।

इन्दिरामहिलाछात्रावासश्चापि विनिर्मितः ।
उन्नतिर्नितरां जाता भूयसी सर्वतोमुखी ॥३१॥

इन्दिरा महिला छात्रावास भी बन कर तैयार हो चुका है । विश्वविद्यालय की सर्वतोमुखी प्रभूत उन्नति निरन्तर हुई है ।

शिलान्यासोऽस्ति सञ्जातः सेन्चुरीह्योस्टलस्य वै ।
कम्प्यूटरादियंत्राणां निवेशश्चापि योजितः ॥३२॥
प्राकारभवनादीनां जीर्णशीर्णं कलेवरम् ।
पुनर्नवीकृतं रम्यं दर्शनीयं प्रतीयते ॥३३॥

शताब्दी-स्मारक छात्रावास की भी नींव पड़ चुकी है। कम्प्यूटर आदि नये (वैज्ञानिक) उपकरणों की स्थापना भी की जा चुकी है। चहार-दीवारियों तथा भवनादि का जीर्ण-शीर्ण कलेवर भी, नये सिरे से बन जाने पर मनोहर एवं दर्शनीय लगने लगा है।

घटनाभिरनेकाभिः विश्वविद्यालयेऽवधिः।
स्मृतिमानेष्यते सर्वैश्चिरं यावदयं पुनः ॥३४॥

अनेक (ऐसी) घटनाओं के कारण विश्वविद्यालय की यह अवधि चिरकाल तक सभी लोगों द्वारा स्मरण की जायेगी।

विश्वविद्यालयोऽद्यापि राराज्यते
स्मारयन् याज्ञवल्क्यं भरद्वाजकम्।
सान्द्रमोहान्धकारं हरन् विद्यया
भूषयञ्जीवनं वत्सराणां शतम् ॥३५॥

महर्षि याज्ञवल्क्य और भरद्वाज का स्मरण कराता हुआ, विद्या के प्रकाश से सघन मोहान्धकार को विनष्ट करता हुआ तथा सौ वर्षों की जीवनावधि को अलंकृत करता हुआ प्रयाग विश्वविद्यालय आज भी शोभा बिखेर रहा है।

ज्ञानविज्ञानराशिं हरन्तोऽनिशं
तन्वते दिग् दिगन्तेषु विद्यागुणम्।
स्नातका यस्य राष्ट्रेऽखिले शंसिता
विश्वविद्यालयोऽसौ चिरं वर्धताम् ॥३६॥

अनवरत गति से ज्ञान एवं विज्ञान की सम्पदा ग्रहण करने वाले, समग्र राष्ट्र में प्रशंसित जिसके स्नातक दिग् दिगन्तों में विद्यागुण का प्रकाशन कर रहे हैं वह प्रयाग विश्वविद्यालय चिरकाल तक फलता-फूलता रहे।

इतिश्रीमदभिराजराजेन्द्रविरचिते
॥ विश्वविद्यालयशताब्दीकाव्ये संगणनासर्गः ॥



गवेषणासर्गः

कलाविज्ञानवाणिज्यविधिभैषज्ययान्त्रिकाः ।
संकायाश्चात्र वर्तन्ते स्थापिताः कृषिसंयुताः ॥१॥

कृषि के साथ ही साथ कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, भैषज्य (Medical) एवं यान्त्रिक (Engineering) संकाय इस विश्वविद्यालय में स्थापित हैं ।

देववाणी तथा हिन्दी दर्शनं ललिताः कलाः ।
राजनीतिस्तथैतिह्यं प्राक्तनं मध्यनूतनम् ॥२॥
शिक्षाशास्त्रञ्च भूगोलं मनोविज्ञानसंज्ञितम् ।
अरबी-फारसी-उर्दू आंग्लभाषाऽर्थशास्त्रकम् ॥३॥
चतुर्दशमिता एवं विभागा राष्ट्रविश्रुताः ।
कलासंकायसन्नद्धा नित्यं प्रशिक्षणे रताः ॥४॥

देववाणी (संस्कृत), हिन्दी, दर्शनशास्त्र, ललितकला (Fine Arts), राजनीतिशास्त्र, प्राचीन इतिहास, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन इतिहास, शिक्षा-शास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान, अरबी-फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र—राष्ट्र-विख्यात ये चौदह विद्याविभाग कला-संकाय से सम्बद्ध हैं और निरन्तर छात्रों के प्रशिक्षण में लगे हैं ।

किञ्चित्कालानुपूर्वं हि संकायेऽस्मिन्नियोजितम् ।
केन्द्रं समाजशास्त्रस्य नूतनं च यशस्करम् ॥५॥

अभी कुछ ही समय पूर्व समाजशास्त्रीय अध्ययन-केन्द्र नामक नवीन तथा कीर्तिकर विभाग इस संकाय से जुड़ा है।

भौतिकं जीवविज्ञानं वानस्पत्यं रसायनम्।
गणितं गृहविज्ञानं रक्षाध्ययनमेव च ॥६॥
अप्लाइडफिजिक्साख्यं ज्ञानकेन्द्रं तथाष्टमम्।
सन्ति विज्ञानसंकाये सर्वाण्येतानि संविदे ॥७॥

भौतिकशास्त्र, जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, रसायनविज्ञान, गणित, गृहविज्ञान, प्रतिरक्षा, तथा अप्लाइड फिजिक्स का अध्ययन-केन्द्र—ये सभी अध्यापनार्थ विज्ञान-संकाय में व्यवस्थित हैं।

स्वतन्त्रो विधिसंकायो वाणिज्यमपि तादृशम्।
अन्ये त्रयोऽपि संकाया सर्वतन्त्रस्वतन्त्रकाः ॥८॥
पृथक् संस्थानरूपेण विस्तरैः स्वैः प्रवर्धिताः।
विश्वविद्यालये भव्ये राजन्ते चाप्यहर्निशम् ॥९॥

कानून और वाणिज्य के संकाय स्वतंत्र हैं। इसी प्रकार अन्य तीन संकाय (इन्जीनियरिंग, मेडिकल तथा एग्रीकल्चर) भी सर्वतंत्र स्वतंत्र हैं। अपने विकास-विस्तार से वृद्धि को प्राप्त वे संकाय पृथक् संस्थानों के रूप में भव्य (इलाहाबाद) विश्वविद्यालय में निरन्तर शोभित हो रहे हैं।

संकायेषु च सर्वेषु विभागेष्वपि साम्प्रतम्।
व्यतीतेऽपि युगे हन्त! ज्ञानविज्ञानपारगाः ॥१०॥
मेधाविद्याकलादक्षा राजनीतिविशारदाः।
विश्वविश्रुतशंसाश्च शिष्यार्चितपदाम्बुजाः ॥११॥
शोधोत्खननकाव्याद्यैः ज्ञानगाम्भीर्यसुव्रतैः।
भारते च विदेशेषु स्वयशोभिः समादृताः ॥१२॥
मन्ये शताधिका एवं सद्‌गुणानां सुरद्रुमाः।
आसन्नद्यापि सन्त्येव प्रेक्षावन्तो विपश्चितः ॥१३॥

इन समस्त फैकल्टियों तथा विभागों में, गोकि अब पुराना समय बीत चुका है, फिर भी सैकड़ों से भी अधिक ज्ञान और विज्ञान के पारखी, प्रतिभा, ज्ञान एवं कलाओं में निष्णात, राजनीति के पण्डित, विश्वविख्यात कीर्ति वाले, शिष्यों के लिए समर्चित-चरण, अपनी शोधों, कविताओं, उत्खनन-कार्यों तथा ज्ञान की गम्भीरता के प्रति निष्ठा के कारण भारत तथा विदेश में व्याप्त यश से समादृत, सद्गुणों के पारिजातभूत प्रतिभाशाली विद्वान् पहले हुए तथा आज भी विद्यमान हैं।

येषां सुकीर्तिरद्यापि गुणगन्धैर्मनोहरैः ।
गन्धयत्येव सामोदं विश्वविद्यालयाजिरम् ।।१४।।

जिनकी शोभन कीर्ति अपने मनोहर गुणरूपी सौरभ से आज भी विश्वविद्यालय की अँगनाई को मँहका रही है।

शरीरेण न वर्तन्ते कामं लोके बुधा अमी ।
तथापि कीर्तिव्यक्तित्वं स्फारं तेषां महीयते ।।१५।।

भले ही आज वे विद्वान् हमारे बीच 'शरीर' से नहीं हैं फिर भी उनकी यशःकाया बड़ी प्रखरता के साथ गौरव प्राप्त कर रही है।

तेषामन्यतमानां वै प्रशंसा लक्षयिष्यते ।
अग्रे प्ररोचनासर्गे पाठकानां मनोमुदे ।।१६।।

उनमें से कुछ विद्वज्जनो की प्रशस्ति, पाठकों के मनोविनोद के लिए, आगामी प्ररोचना (प्रशंसा) सर्ग में प्रस्तुत की जायेगी।

रम्यौ परिसरौ द्वौ स्तो विश्वविद्यालयस्य वै ।
आद्यस्तु सीनेटप्रख्यो एम्० सी० सीति चापरः ।।१७।।

विश्वविद्यालय के दो परिसर (Campus) हैं। पहला है—सीनेट-कैम्पस् और दूसरा—म्योर सेण्ट्रल कालेज- कैम्पस्।

सीनेटपरिधौ रम्ये द्वारे लौहकपाटके ।
प्राच्यां दिशि विलोक्येते वटमुद्राङ्कभूषिते ।।१८।।

सीनेट-कैम्पस में, पूर्वी दिशा में वरगद की मुद्रा से विभूषित तथा लौह-निर्मित फाटकों वाले दो रमणीय प्रवेशद्वार दिखाई पड़ते हैं।

दक्षिणे दिग्विभागेऽपि प्रवेशद्वारमायतम्।
भवनं छात्रसंघस्य यद्वामाङ्गे मनोरमम् ॥१९॥

कैम्पस के दक्षिणी दिग्भाग में भी एक चौड़ा सा प्रवेश-द्वार है जिसकी बाईं ओर छात्रसंघ का मनोरम भवन अवस्थित है।

समक्षं स्थापिता यस्य दृश्यते क्रान्तिकारिणः।
मूर्तिः पद्मधरस्यैका पाषाणी चारुदर्शना ॥२०॥

छात्रसंघ-भवन के सामने ही देखने में सुन्दर क्रान्तिकारी लाल पद्मधर की एक पाषाण-निर्मित मूर्ति स्थापित दिखाई पड़ती है।

यथास्थानं नु लक्ष्यन्ते विभागाः पृथगालयाः।
शष्पवीथीसदुद्यानधारायंत्रादिभूषिताः ॥२१॥

पृथक् भवनो वाले विद्या-विभाग यथास्थान दृष्टिगोचर होते हैं जो कि हरी-हरी घासों की वाटिकाओं, रमणीय बगीचों तथा फौव्वारों आदि से अलंकृत हैं।

प्रवृत्तेऽध्ययनारावे विहङ्गकुलमण्डितः।
सत्पञ्जर इवानन्दं तनोति प्रस्फुटं हृदि ॥२२॥

(जव विभिन्न विभागों में) अध्ययन का कलरव गूँजता है तव यह परिसर पक्षियों के परिवार से भरे-पुरे एक सुन्दर पिंजरे के समान हृदय में उन्मुक्त आनन्द की सृष्टि करता है।

परिधेः पूर्वदिग्भागे महासौधो महोच्छ्रितः।
सीनेटाख्यः स्वविच्छित्या गौरवं वितनोति वै ॥२३॥

कैम्पस के पूर्वी छोर पर 'सीनेट-हाल' नामक अत्यन्त विशाल एवं उत्तुङ्ग आस्थानमण्डप अपनी कलावत्ता से गौरव का विस्तार करता है।

ब्रह्मदेशवनानीतैष्टीकदारुविनिर्मितैः ।
गवाक्षैश्च कपाटैश्च वैलक्षण्यं सृजत्ययम् ॥२४॥

बर्मा देश से मँगायी गयी 'टीक' की लकड़ी से निर्मित किये गये वातायनों एवं किवाड़ों से यह (हाल) विलक्षणता की सृष्टि करता है।

आंग्लदेशसमानीतं घटिकायन्त्रमद्भुतम् ।
चतुर्मुखं महाकारं वलभ्यामस्य कीलितम् ॥२५॥

इसी सीनेट भवन की वलभी (सर्वोपरि कक्ष) में इंगलैंड से ले आई गई, चौतरफा मुँह वाली, विशाल आकार वाली अद्भुत घड़ी स्थापित है।

यस्य चण्डध्वनिं श्रुत्वा दूरदूरातिगामिनम् ।
छात्राणां पिपठिषूणामालस्यं प्रपलायते ॥२६॥

जिम घड़ी की दूर, अत्यन्त दूर तक जाती हुई प्रचण्ड ध्वनि को सुनकर अध्ययन में दत्तचित्त छात्रों का आलस्य नष्ट होता रहता है।

सीनेटपृष्ठभागे तु न्यग्रोधो बृहदाकृतिः ।
लक्ष्यमस्य स्फुटीकुर्वन् छायारम्यो विराजते ॥२७॥

सीनेट हाल के पीछे (अर्थात् पश्चिम दिशा में) विशाल आकार-प्रकार वाला तथा घनी छाँव के कारण मनोरम बरगद का पेड़ विश्वविद्यालय के लक्ष्य (कोट रामी टॉट आर्बोरस) को सुस्पष्ट करता हुआ विराजमान है।

एम्० सी० सी० नाम्ना ख्यातो द्वितीयश्चापि वर्तते ।
विश्वविद्यालयस्यास्य परिधिः बृहदाकृतिः ॥२८॥
अत्र विज्ञानसंकायः क्रीडाक्षेत्रं सरोवरम् ।
व्यायामनिलयश्चापि समवेता विभान्ति वै ॥२९॥

म्योर सेण्ट्रल कालेज नाम से मशहूर, विशाल आकार वाला यूनिवर्सिटी का एक दूसरा कैम्पस भी है। इसमें साइंस-फैकल्टी, खेलकूद का मैदान, सन्तरण-ताल तथा व्यायामशाला आदि इकट्ठे मौजूद हैं।

आस्थानमण्डपश्चात्र विजयानगराभिधः ।
स्थापत्यकौशलैः स्वीयैर्दृष्टिं हरति पश्यताम् ॥३०॥

इसी परिसर में विजयानगरम् हाल भी है जो कि अपनी पच्चीकारी और निर्माणकला से दर्शकों की दृष्टि चुरा लेता है ।

विश्वविद्यालयस्यास्य ख्यापयन्ननिशं यशः ।
कीर्तिस्तम्भोऽत्र सन्धत्ते स्वर्गस्पर्शश्रियं पराम् ॥३१॥

इस विश्वविद्यालय के यश को निरन्तर प्रख्यापित करता हुआ एक कीर्ति-स्तम्भ (मीनार) इसी कैम्पस में, मानो स्वर्ग छू लेने की प्रशंसनीय सुषमा को प्रकट कर रहा है ।

अन्ताराष्ट्रियकश्छात्रावासो गान्धेर्निवेशनम् ।
प्राध्यापकनिवासोऽथ एन्० सी० सी० सुमहालयः ॥३२॥
इत्येतानि च सर्वाणि संस्थितानि पृथक्तया ।
चाथम् लाइंसभूक्षेत्रे कौबेरदिगवस्थिते ॥३३॥

इण्टरनेशनल हॉस्टल, गाँधीभवन, प्राध्यापक-निवास तथा एन्० सी० सी० भवन–ये सब के सब विश्वविद्यालय की उत्तरी दिशा में चाथम लाइन्स नामक इलाके में अलग-अलग अवस्थित हैं ।

छात्रावासाः स्फुरत्सौधा रम्यवातायनावृताः ।
परितस्त्वेव दृश्यन्ते विश्वविद्यालयं किल ॥३४॥
प्रमदाचरणनाम्नैकः सुन्दरलालाभिधोऽपरः ।
हालैण्डहालनाम्नैको गंगानाथाभिधोऽपरः ॥३५॥
कालीप्रसादनाम्नैको डॉयमण्डजुब्ल्याह्वयः ।
हिन्दुमुस्लिमनामभ्यां विख्यातौ द्वौ महालयौ ॥३६॥
अमरनाथनामैकोऽपरश्चापि दिगम्बरः ।
ताराचन्द्राभिधश्चैकः सरोजिन्यभिधोऽपरः ॥३७॥

इन्दिरासंज्ञया नव्यः सम्प्रत्यपि निवेशितः ।
छात्राणां च कृते वासो विशालो बहुभूमिकः ॥३८॥

विश्वविद्यालय के चारों ओर ही रमणीय गवाक्षों से विभूषित देदीप्यमान राजमहल जैसे छात्रावास अवस्थित हैं। एक प्रमदाचरण बनर्जी के नाम से विख्यात है तो दूसरा सर सुन्दरलाल के नाम से। एक हालैण्डहाल के नाम से तो दूसरा सर गंगानाथ झा के नाम से; एक कालीप्रसाद जी के नाम से प्रसिद्ध है तो दूसरा हीरकजयन्ती के नाम से। हिन्दू तथा मुस्लिम संज्ञाओं से विख्यात हैं दो विशाल छात्रावास—हिन्दू छात्राबास तथा मुस्लिम बोर्डिंग हाउस ! एक छात्रावास डॉ० अमरनाथ झा के नाम पर है तो दूसरा दिगम्बर जैन के नाम पर ! एक डॉ० ताराचन्द्र के नाम से विख्यात है तो दूसरा (Girl's Hostel) सरोजिनी नायडू के नाम से। अभी-अभी इन्दिरा गाँधी के नाम पर अनेक मञ्जिल वाला एक विशाल छात्रावास छात्राओं के लिये बनवाया गया है।

लॉजनाम्ना सुविख्याता नातिदीर्घा इतस्ततः ।
सन्ति केचन व्याकीर्णा निवेशाश्छात्रसंश्रयाः ॥३९॥
गृहस्थैर्नागरैश्चापि लाजीकृत्य व्यवस्थिताः ।
छात्रावासा विराजन्ते नैके नगरमण्डले ॥४०॥
अयं दिङ्मात्रनिर्देशो गवेषणपुरस्सरः ।
विश्वविद्यालयस्यास्य सञ्चयाय मया कृतः ॥४१॥

'लॉज' के नाम से सुपरिचित, छोटे आकार-प्रकार वाले, विद्यार्थियों को आवास-सुविधा देने वाले कुछ भवन भी इधर-उधर बिखरे हैं। गृहस्थ नागरिकों द्वारा 'लॉज' के रूप में उठाये गये अनेक छात्रावास नगर-क्षेत्र में विद्यमान हैं। इस विश्वविद्यालय का स्वरूप स्पष्ट करने के उद्देश्य से मैंने बड़ी खोज-बीन के साथ इन भवनों का नाममात्र संकेत किया है। (अर्थात् इनका विस्तृत परिचय अभी भी अपेक्षित है।)

स्वकीयैः समुदाचारैरवदानैश्च शिक्षया ।
परम्पराभिर्नव्याभिः राष्ट्रभक्तिप्रचारणैः ॥४२॥

स्वोपज्ञवैदुषीभावैर्वन्द्यचारित्र्यसर्जनैः।
मानवीयोचिताचारशिक्षया च दिवानिशम् ॥४३॥
संस्थापयन् नवादर्शं भव्यसंस्कृतिसंस्कृतम्।
विश्वविद्यालयोऽद्यापि भूतलेषु महीयते ॥४४॥

अपने समुदाचार (Code of Conduct) से, विविध योगदानों से, शिक्षासे, नित्य नूतन परम्पराओं से, राष्ट्रभक्ति के प्रचार-प्रसार से, स्वयं स्थापित विद्वत्ता के मानदण्डों से, वन्दनीय चरित्रों की सर्जना से तथा मानवीयोचित आचरण-शिक्षा से रात-दिन भव्य-संस्कृति से समन्वित नवीन आदर्शों की स्थापना करता हुआ यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय आज भी सारे संसार में महनीयता प्राप्त कर रहा है।

एतदङ्गणसञ्जाता एतत्कुक्षौ प्रशिक्षिताः।
एतत्परिसरे रम्ये कृतहेलाः कृतश्रमाः ॥४५॥
चित्रकाराः कलाकारा विद्वांसश्च प्रशासकाः।
दक्षा राजनये मञ्चे कवयः कोविदा बुधाः ॥४६॥
कुत्र नैवाभिवर्तन्ते भारते भारतेतरे।
पूर्णविश्वस्थिते देशे शतशोऽथ सहस्रशः ॥४७॥

इस विश्वविद्यालय की अँगनाई में संवर्धित, इसकी बाहों में प्रशिक्षित, इसके मनोरम परिसर में खेले-कूदे तथा कृतश्रम कितने ही चित्रकार, कलाकार, विद्वान्, प्रशासक, समर्थ राजनेता एवं वक्ता, कवि, शास्त्रज्ञ एवं प्रतिभाशाली विद्वान् भारत देश में अथवा भारत से इतर सम्पूर्ण विश्व के अन्यान्य देशों में, सैकड़ों अथवा हजारों की संख्या में, भला कहाँ नहीं हैं ?

यथा तनोति सौरभ्यं प्रवृत्तो मलयाचलात्।
कणे-कणे वनोद्देशे मृदुः मन्दसमीरणः ॥४८॥
विश्वविद्यालयस्मोऽयं तथैव गुणगौरवम्।
स्वकीयं तनुते लोके छात्रछात्रासमुच्चयैः ॥४९॥

जैसे मलयाचल से चलने वाला मृदु मन्द समीर वनखण्ड के कण-कण में सुरभि बिखेर देता है ठीक उसी प्रकार यह विश्वविद्यालय भी छात्र एवं छात्राओं के माध्यम से अपने गुण की गरिमा संसार में प्रकाशित कर रहा है।

काचैश्चित्रैः प्रविष्टा दिवसकरविभा सप्तवर्णेन्द्रचाप-
प्रोद्यद्विच्छित्तिजालं घटयति नितरां दृष्टिभाजां मनोज्ञा।
यद्युत्कीर्णा नितान्तं मदयति हृदयं काष्ठचर्चा पुराणी
पाषाणी वास्तुलक्ष्मीर्जयतु भुवि चिरं साधु श्रीनेत्रनाम्नी ॥५०॥

रंग-बिरंगे काचों से प्रविष्ट सूर्य की मनोहर आभा (जहाँ) दर्शकों के समक्ष सतरंगी इन्द्रधनुष की विकसित छटा बिखेरती है और जिसकी छत में उत्कीर्ण की गई प्राचीन काष्ठ-कलाकृति हृदय को बरबस आकृष्ट कर लेती है 'श्रीनेत्र' (मीनेट) नामक वह वास्तु-लक्ष्मी भूलोक में चिरकाल तक निर्विघ्न जीवित रहे।

सरस्वत्या वीणा मृदुरणनरम्याऽमृतझरीम्।
बटूनां यन्नित्यं श्रवणकुहरे सिञ्चतितराम्।
नवोद्योगा विद्या कलयति धियो यत्र विपुला।
जयेन्नित्यं सोऽयं भरतभुवि विद्याधननिधिः ॥५१॥

मिठासभरे अनुरणन के कारण रमणीय सरस्वती की वीणा जहाँ विद्यार्थियों के श्रवणकुहरों में अमृत की फुहार सींचती रहती है, जहाँ नवीन उद्योगों वाली विपुल विद्या (छात्रों की) बुद्धियों का सम्मार्जन करती रहती है—विद्याधन का सर्वस्वभूत वह प्रयाग विश्वविद्यालय भारतभूमि में निरन्तर उत्कर्षवान् हो।

इतिश्रीमदभिराजराजेन्द्रविरचिते
॥ विश्वविद्यालयशताब्दीकाव्ये गवेषणासर्गः ॥



प्ररोचनासर्गः

यातास्ते विनयादिसद्गुणयुता विज्ञानकल्पद्रुमाः
विद्वांसः प्रतिभाप्रकर्षमुखरा वात्सल्यदीक्षारताः ।
यच्चारित्र्यसुमासवैः परिमलैः सेयं धरित्री महत्
सौभाग्यं तनुते सुगन्धमहितं सम्प्रत्यपि प्राञ्जलम् ॥१॥

विनयादि सद्गुणों से युक्त, श्रेष्ठ ज्ञान के कल्पतरुभूत, प्रतिभा के प्रकर्ष से मुखर तथा वात्सल्य-रूपी दीक्षा में रत वे विद्वान् अब नहीं रहे जिनके चरित्र रूपी पुष्प की मदिरा और परिमल से यह पृथ्वी आज भी सुरभित है तथा प्राञ्जल सौभाग्य का अनुभव कर रही है।

योऽभूदादिगुरुः समृद्धवचनो वैशारदीमण्डितः
संस्कारार्जितवैदुषीक उभये काव्येऽथ षड्दर्शने ।
भट्टाचार्यवरं नतेन शिरसा आदित्यरामाभिधं
तं वृद्धप्रगुरुं नमामि सुरवाक्लोकप्रियत्वास्पदम् ॥२॥

जो (इस विश्वविद्यालय में संस्कृत के) प्रथम शिक्षक थे, जो समृद्ध वाणी वाले, विद्वत्ता से विभूषित तथा काव्य एवं छहों दर्शन—दोनों में ही संस्कारों से अर्जित पाण्डित्य वाले थे ऐसे वृद्ध-प्रगुरु पं० आदित्यराम भट्टाचार्य को विनत-मस्तक प्रणाम करता हूँ। संस्कृत की लोकप्रियता के कारणभूत थे वह !

मीमांसापरिशीलनैकरुचिको भाषात्रयीपारगः
विद्वद्व्रातवराग्रणीरथ महोपाध्यायभूषार्चितः ।
आचार्यप्रवरो जयत्यभिमतोऽद्यापि प्रवृद्धैर्गुणैः
गङ्गानाथ उमेशवन्दितपदोऽसौ तीरभुक्तिश्रवः ।।३।।

मीमांसाशास्त्र के स्वाध्याय में दत्तचित्त, संस्कृत, मैथिल तथा अंग्रेजी भाषा के मर्मज्ञ, विद्वत् समुदाय के श्रेष्ठ पुरोधा, महामहोपाध्याय के अलंकरण से भूषित (अपने शिष्य) म० म० डॉ० उमेश मिश्र द्वारा वन्दित चरण वाले तथा तिरहुत के कीर्तिस्तम्भ आचार्यप्रवर म० म० डॉ० गंगानाथ झा आज भी अपने लोकव्यापी गुणों के कारण उत्कर्ष को प्राप्त कर रहे हैं ।

आचार्यं तमहं प्रसन्नवदनं ध्यायेऽनिशं श्रद्धया
व्याख्येयीकृतमानसारसुयशा योऽभूज्जयी वाङ्मये ।
स्थापत्यादिगवेषणे वटुगणे विद्यापथान्वेषणे
ज्ञानाज्ञानविमर्शने च धिषणा यस्य प्रथां सङ्गता ।।४।।

उन डॉ० प्रसन्नकुमार आचार्य का मैं श्रद्धापूर्वक सदैव स्मरण करता हूँ जो विद्या के क्षेत्र में मानसार नामक ग्रन्थ की व्याख्या के कारण यशस्वी बने । स्थापत्य-सम्बन्धी शोधों में, छात्रों के बीच विद्या-पद्धति के अन्वेषण में तथा ज्ञान-अज्ञान के विमर्श में जिनकी प्रतिभा कीर्ति प्राप्त कर सकी ।

बुद्ध्या देवगुरुं गिरा जलधरं प्रीत्या सुहृत्सत्तमं
वात्सल्येन कुटुम्बिनश्च पितरौ दानेन लक्षाधिपान् ।
साहित्यश्रुतिदर्शनादिविभवैः साक्षाच्छिवं भावयन्
क्षेत्रेशो जयतादनेहसि चिरञ्जीवन् यशोभिश्शुभैः ।।५।।

बुद्धि से सुरगुरु बृहस्पति को, वाणी से मेघ को, स्नेह-प्रेम से श्रेष्ठ मित्र को, वात्सल्य से माँ-बाप एवं कुटुम्बियों को, दान से लखपतियों को तथा साहित्य-वेद एवं दर्शनशास्त्रीय गरिमा से साक्षात् भगवान् शिव को चरितार्थ करते हुए, पवित्र कीर्ति से इस धराधाम में चिर काल तक जीवन धारण करते हुए आचार्य क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय जी उत्कर्ष प्राप्त करें ।

कृतविद्यैः स्फुरन्मेधैः शीलचारित्र्यसम्मतैः ।
शिष्यैर्विनयसम्पन्नैर्बाबूरामोऽस्ति सम्मतः ॥६॥

प्रशस्त अध्ययन वाले, देदीप्यमान प्रतिभा वाले, विनय सम्पन्न तथा शील-चरित्र से संवलित अपने शिष्यों द्वारा डॉ० बाबूराम सक्सेना जी समादृत हैं ।

वाणीभिर्वपुषा क्रियाभिरनिशं ब्राह्मं महो धारयन्
वाञ्छाकल्पतरुर्बभूव नितरां विद्यार्थिवृन्दाय यः ।
सारासारविचारणप्रकटधीर्विज्ञैकबन्धुश्चिरम्
आचार्यो जयतादसौ रघुवरः श्रीमिट्ठुलालाभिधः ॥७॥

वचनों से, व्यक्तित्व से और अपनी गतिविधियों से ब्रह्मतेज धारण करने वाले, जो विद्यार्थियों के लिए सदैव वाञ्छा-कल्पतरु बने रहे, जो पण्डितजनों के एकमात्र बन्धु थे और सारासार-विचार में जिनकी बुद्धि समर्थ थी ऐसे आचार्य रघुवर मिट्ठूलाल (शास्त्री) जी उत्कर्ष प्राप्त करें ।

फुल्लाम्भोरुहसद्विकासिवदनं भाले लसच्चन्दनं
ग्रीवावेष्टितकासकुन्दधवलप्रावारकं शीर्षके ।
उष्णीशं दधतं शुचित्वमहितं मन्दस्मितैः शोभितं
वन्दे श्रीमदुमेशमिश्रमनघं वैदुष्यरत्नार्णवम् ॥८॥

विकसित कमलपुष्प के समान शोभासम्पन्न मुखमण्डल, भाल पर रमणीय चन्दन, गले में लिपटा कास एवं कुन्दपुष्प के समान धवल दुपट्टा तथा शीश पर (मिथिला की) पगड़ी धारण किये हुए, पवित्रता की प्रतिमूर्ति, मन्द मुस्कानों से भूषित तथा वैदुषी के रत्नार्णवभूत पुण्यश्लोक म० म० डॉ० उमेशमिश्र को प्रणाम करता हूँ ।

सशरीरां द्युसद्वाणीं चारुवृत्तां तपस्विनीम् ।
मथुरां नौमि तां देवीं हिर्लेकरशुभाभिधाम् ॥९॥

देववाणी संस्कृत की जीवन्त प्रतिमा, श्लाघ्य आचरण वाली तपस्विनी आदरणीया मथुरा (नारायण) हिर्लेकर को मेरा प्रणाम है ।

वेदव्याकृतिपाण्डितीमुभयथा विभ्रद् विमुग्धाकृतिः
गोष्ठीबन्धपटुर्युवा युवगणे वृद्धेषु वृद्धोऽनघः ।
दाक्षिण्यं स्वगुणैश्च वृत्तिनिचयैराजीवनं धारयन्
जीवत्येव दिवङ्गतोऽपि नितरां वाणीप्रसादो गुरुः ॥१०॥

वेद और व्याकरण का पाण्डित्य (विश्वविद्यालय तथा पाठशाला) दोनों ही पद्धतियों से धारण करने वाले, मुग्ध मुखाकृति वाले, गोष्ठी-संयोजन में निपुण, युवकों में युवक और वृद्धों में मनस्वी वृद्ध, अपने गुणों से दाक्षिण्य तथा सेवा-वृत्तियों से दक्षिण-दिशा (रायपुर, कोल्हापुर आदि) को ज़ीवन भर अलंकृत करने वाले गुरुवर्य पं० सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदी जी दिवंगत होते हुए भी जीवित ही हैं ।

काव्यव्याकरणत्रयीव्यतिकरे यन्निर्मला शेमुषी
भाषाशास्त्रपुराणनीतिनिचये ताथागते वा नये ।
प्रागल्भ्यं दधती सताम्मतिमतां शंसाङ्गता योग्यया
वन्देऽध्यक्षविभावसुं प्रभवतामाद्याप्रसादाभिधम् ॥११॥

काव्य, व्याकरण तथा वेदविद्या में, भाषाविज्ञान, पुराण, नीतिशास्त्र एवं बौद्ध-दर्शन में प्रागल्भ्य धारण करने वाली जिनकी निर्मल प्रतिभा अपनी क्षमता के कारण श्रेष्ठ विद्वज्जनों के लिये उत्कृष्ट श्रद्धा का विषय बनती रही, (संस्कृत-विभाग के) पदारूढ़ अध्यक्षों में सूर्य के समान (तेजस्वी) डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र जी को प्रणाम करता हूँ ।

वचोवल्ली मल्लीकुसुमसुकुमाराऽधररुचिः
शुचिस्मेरा स्वैराऽऽव्रजनरुचिका भाषणकला ।
स्फुरद्गीतिः कण्ठे ललितललितो लालनविधिः
गुरुर्लक्ष्मीकान्तः कलयति नितान्तं हृदि मुदम् ॥१२॥

जिनकी वाणी रूपी लता मल्लीपुष्प के समान कोमल है, जिनकी अधर-शोभा ऋजु-मुस्कान से युक्त है, जिनका वार्ताक्रम निर्बन्ध भाव से गतिमान होने

वाला है, जिनके कण्ठ में गीत की खनक है और जिनका वात्सल्य अत्यन्त रुचिकर है—ऐसे गुरुवर्य पं० लक्ष्मीकान्त दीक्षित जी हृदय में आमोद का निरन्तर संचार करते हैं।

काव्योद्यानवसन्तकं तमनिशं विद्वद्वरेण्यं गुरुं
वन्दे शुक्लगुणान्वयं सुचरितं चण्डीप्रसादाभिधम्।
यच्छैलूषकलाऽमलाध्वनिसृतिश्चानन्दसंवर्धिनी
चित्तस्था चुलुकीकरोति निभृतं पीयूषसिन्धुं मम ।।१३।।

काव्य रूपी उद्यान के वसन्त, गुणों तथा वंशपरम्परा—दोनों से ही शुक्ल, सुचरित उन विद्वद्वरेण्य गुरुवर्य डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल को प्रणाम करता हूँ जिनकी अभिनय-कला, आनन्दवर्धिनी वार्ताशैली (अथवा आचार्य आनन्दवर्धन के यश का विस्तार करने वाली जिनकी ध्वन्यालोक की निर्मल व्याख्या) स्मृतिपथ में आते ही अमृत-सिन्धु को मेरे लिए शान्तभाव से चुलुक-पेय बना देती है।

प्रस्तुवन् वैदुषीभावैः हर्षभोजादिगौरवम्।
राजवंशधरो भाति गुरुवर्यो बहुश्रुतः ।।१४।।
स्वाध्यायी लालसंज्ञोऽसौ यदुपालोऽट्टहासकृत्।
मित्रमण्डलसम्मोदैः परीतः प्राघुणप्रियः ।।१५।।

अपनी विद्वत्ता से राजा हर्ष एवं भोज का गौरव प्रकट करने वाले, बहुश्रुत, स्वाध्यायी, पहुनाई करने में तत्पर, मित्रजनों के हास-परिहास से (निरन्तर) घिरे रहने वाले राजवंशोत्पन्न गुरुवर लाल (रमा) यदुपाल सिंह थे।

मितभाषी बहुज्ञोऽसौ बहुभाषार्थपारगः।
तुहिनाचलगृहोत्पन्नश्चाटुनर्मविशारदः ।।१६।।
जयत्यसौ महावीरप्रसादो मतिमान् परः।
लखेडेति सुहृद्वाच्यः पह्लवीलिपिमार्मिकः ।।१७।।

बहुत कम बोलने वाले (किन्तु) प्रभूत ज्ञान-सम्पन्न, अनेक भाषाओं के अर्थवेत्ता, हिमालय (गढ़वाल) के आँगन में उत्पन्न, पहलवी लिपि के जानकार श्रेष्ठ विद्वान्, मित्रों द्वारा 'लखेड़ा' नाम से पुकारे जाने वाले पं० महावीर प्र साद जी की जय हो।

गुरुं रामसियामिश्रं नौमि भक्त्या निरन्तरम्।
मन्दस्मितमयं सौम्यं गभीरं शिष्यवत्सलम् ॥१८॥
प्राग्जन्मार्जितसंस्कारैः प्रबुद्धोऽपि विश्रृङ्खलः।
जीवनं नयति स्वीयं योऽवधूतसमं चिरम् ॥१९॥

मन्द मुस्कान वाले, सौम्य, गम्भीर, शिष्यवत्सल गुरुदेव पं० रामसिया मिश्र को निरन्तर भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ जो पूर्वजन्म के सञ्चित संस्कारों-वश प्रबुद्ध होने हुए भी विश्रृङ्खल हो गये। चिरकाल से ही जो अवधूत जैसी अपनी जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं।

न्यक्कुर्वाणा निकामं कवनरसपुटैर्या सुधाऽऽसारसिन्धुं
जाता विश्वैकभाषा ऋषिमुनिमहिता संस्कृताख्या पुराणी।
सा मे विद्यावदातैः प्रवरगुरुजनैः पाठिता यैस्समोदं
तेषामेषा समर्चा प्रणतिरतधिया प्रस्तुता वाङ्मयीयम् ॥२०॥

काव्य रस-सन्दोह से अमृत-सिन्धु को भी पूर्णतः न्यग्भूत कर देने वाली, ऋषियों तथा मुनियों द्वारा समादृत संस्कृत नामक जो प्राचीन भाषा विश्व की एकमात्र भाषा बन गई है, विद्यावदात जिन श्रेष्ठ गुरुजनों द्वारा वह भाषा प्रसन्नता-पूर्वक मुझे पढ़ाई गई उनकी यह वाङ्मयी समर्चा प्रणाम-पूर्वक (मेरे द्वारा) प्रस्तुत की गई।

इदानीमपि ये सन्ति विभागे गुरवो मम।
बुद्धिमेधादिवैशाखाः प्राज्ञाः शास्त्रार्थपारगाः ॥२१॥
यद्वात्सल्यद्रुमच्छायामाश्रित्य ससुखं मया।
नीयते जीवनांशोऽयं ते प्रणम्याः सहस्रशः ॥२२॥

बुद्धि एवं प्रतिभादि गुणों के वैशाख (मंथनदण्ड) प्राज्ञ तथा शास्त्रार्थों के मर्मज्ञ जो गुरुजन अभी भी हमारे (संस्कृत) विभाग में विद्यमान हैं और जिनके

वात्सल्यतरु की छाया का आश्रय लेकर जीवन का यह (अध्यापकीय) भाग मैं सुखपूर्वक विता रहा हूँ वे मेरे लिये हजारों बार प्रणम्य हैं।

इतः परं हि केषाञ्चित् स्वनामोल्लेखपूर्वकम्।
प्रशस्तिः कल्प्यते लघ्वी नव्या परिचयात्मिका ॥२३॥
इमे ते सन्ति विद्वांसो येषां गुणगणैर्धिया।
विश्वविद्यालयस्सोऽयं विश्वविख्याततां‌गतः ॥२४॥

अब इसके वाद नामोल्लेख-पूर्वक कुछ लोगों की परिचयात्मक संक्षिप्त-प्रशस्ति प्रस्तुत की जा रही है। ये वे विद्वज्जन हैं जिनके गुण-समूहों तथा प्रतिभा के कारण यह विश्वविद्यालय विश्वजनीन ख्याति का पात्र बन गया।

काश्यां संस्कृतकालेजे राजकीये बभूव यः।
प्राचार्यः संस्कृतज्ञानामग्रणीः सांख्यकोविदः ॥२५॥
म्योरसेण्ट्रलकालेजप्राचार्यश्च ततः परम्।
ज्यौतिषे धृतनैपुण्यः थीबोऽसौ गीयते न कैः ॥२६॥

गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज बनारस के प्रिंसिपल, संस्कृतज्ञों के अग्रणी, सांख्यदर्शन के विशेज्ञ, ज्यौतिषशास्त्र में निपुण तथा अन्तिम दिनों में म्योर सेण्ट्रल कालेज के प्रिंसिपल प्रो० थीबो किसके लिये प्रशंसा-योग्य नहीं हैं ?

ऐतिह्ये तर्कशास्त्रे च धारयन् साधु दक्षताम्।
आंग्लभाषैकमर्मज्ञो लिण्टनो जीवति ध्रुवम् ॥२७॥

इतिहास तथा तर्कशास्त्र में भरपूर योग्यता रखने वाले, अंग्रेजी भाषा के विलक्षण मर्मज्ञ प्रो० लिण्टन निश्चय ही (कीर्ति से आज भी) जीवित हैं।

भौतिक्यां विश्वविख्यातो नव्यशोधपरायणः।
साहा श्रीमेघनादोऽसौ विश्वविद्यालयोदयः ॥२८॥

नई-नई शोधो में दत्तचित्त, भौतिकी के क्षेत्र में विश्व-विख्यात डॉ० मेघनाद साहा प्रयाग विश्वविद्यालय के अभ्युदय-स्वरूप थे।

के० एन्० कृष्णन् महाभागो भौतिकीज्ञानपारगः।
कीर्तिं जगाम विस्तीर्णां स्वीयैः बुद्ध्यार्जितश्रमैः ॥२६॥

अपनी प्रतिभा से अर्जित परिश्रम के कारण, भौतिकशास्त्र के ज्ञान में पारंगत प्रो० के० ए० कृष्णन् महोदय भी विशाल कीर्ति के पात्र बने।

तरन् जले निमग्नोऽभूत् सतताले महामनाः।
वैदुषीगुणसम्पन्नो रुद्रः एस्० के० सुविश्रुतः ॥३०॥
अर्थशास्त्रे दृढारम्भः सद्गुणैकमहाश्रयः।
यस्य कीर्त्या गुणैश्चायं विश्वविद्यालयः कृती ॥३१॥

सतताल नामक झील में तैरते हुए जो डूब गये, ऐसे डॉ० एस्० के० रुद्र वैदुषी-गुण से सम्पन्न, अर्थशास्त्र में नवीन शोधों के जन्मदाता, तथा सदगुणों के महान् आश्रय थे। उनकी कीर्ति एवं गुणों से यह विश्वविद्यालय सौभाग्य-शाली है।

उदारहृदयं श्लाघ्यं शीलचारित्र्यमन्दिरम्।
भैषज्यनिपुणं गेहे शास्त्रदक्षं बुधालये ॥३२॥
अर्थशास्त्रीयसिद्धान्तालोचने दर्शितार्हतम्।
श्री जे० के० मेहतेत्याख्यं को न स्मरति सादरम् ॥३३

उदारहृदय, शील तथा चरित्र के मूलाधार, घर में चिकित्सा-निपुण तथा यूनिवर्सिटी में शास्त्रचर्चा में निरत, अर्थशास्त्रीय सिद्धान्तों की समालोचना में योग्यता प्रदर्शित करने वाले प्रशंसनीय प्रो० जे० के० मेहता को कौन आदर-पूर्वक स्मरण नहीं करता?

अमेरिकादिराष्ट्रेषु ख्यातिर्यस्य गता ध्रुवम्।
वैदुषीप्रतिभायुक्तो यो बभूव बुधाग्रणीः ॥३४॥

नारायणोऽमरसंज्ञः अग्रवालो जयत्यसौ ।
एम्० वी० ए०संस्थया ख्यातः स्वीयहिन्दीप्रलेखनैः ।।३५।।

अमेरिका आदि राष्ट्रों में भी जिनकी ख्याति स्थापित हुई, विद्वत्ता और प्रतिभा के कारण जो विद्वानों में अग्रणी बने, एम्० वी० ए० संस्थान तथा अपने हिन्दी ग्रन्थों से विख्यात डॉ० अमरनारायण अग्रवाल आज भी उत्कर्षवान् हैं ।

आंग्लभाषामहाचार्यः प्रकृत्या कवितारुचिः ।
पाण्डेयश्श्रीशिवाधारो न केषामिह सम्मतः ।।३६।।

अंग्रेजी भाषा के महान् विशारद, स्वभाव से काव्यप्रेमी प्रो० शिवाधार पाण्डेय भला किनके आदरणीय नहीं हैं ?

सौम्यवेषो गिरा सौम्यः सौम्यव्यवहृतिः सदा !
देवः सतीशचन्द्रोऽसौ विपुलां कीर्तिमादधे ।।३७।।

सौम्य वेष-भूषा वाले, वाणी से सौम्य तथा व्यवहार से भी सदैव सौम्य प्रो० सतीशचन्द्र देव जी ने प्रभूत कीर्ति अर्जित की ।

वैदुषीयशसा पश्चाद् योऽध्यक्षपदगौरवे ।
विश्वविद्यालये भव्ये देहलीस्थे नियोजितः ।।३८।।
पी० ई० दस्तूरनामासौ आंग्लभाषाविशारदः ।
वर्धयामास सत्कीर्तिं स्वाध्यापनमहत्तया ।।३९।।

अपनी विद्वत्ता की ख्याति-वश जो बाद में भव्य दिल्ली विश्वविद्यालय में (अंग्रेजी-विभाग के) अध्यक्षपद के गौरव पर अधिष्ठित हुए, अंग्रेजी भाषा के मर्मज्ञ उन प्रो० पी० ई० दस्तूर ने अपनी अध्यापन-कुशलता से सत्कीर्ति अर्जित की ।

विस्तृताभिरुचिर्यस्य वैदुषी च विनम्रता ।
श्रीमद् बेनीप्रसादोऽसौ शिक्षाधुर्यो जयीभवेत् ।।४०।।

जिनकी अभिरुचि, विद्वत्ता और विनम्रता—तीनों विस्तृत थीं ऐसे शिक्षा-धुरीण डॉ॰ बेनीप्रसाद जी उत्कर्ष प्राप्त करें।

राजदूतपदं गृह्णन् ईराने भारतस्य यः।
महतीं ख्यातिमादाय पुण्यश्लोकतामगात् ॥४१
महानैतिह्यविन्नूनं शिक्षामर्मज्ञतां गतः।
ताराचन्दो विभात्येव स्वीयसद्गुणसंचयैः ॥४२॥

ईरान में भारतीय राजदूत का पद ग्रहण करके, विपुल ख्याति प्राप्त करने के अनन्तर जो दिवंगत हुए, निश्चय ही महान् ऐतिह्यविद् तथा शिक्षा-मर्मज्ञ डॉ॰ ताराचन्द अपने सद्गुणों के समूह से विभासित हैं।

खानोऽसौ श्रीशफातोऽहमदपदयुतोऽध्यक्ष ऐतिह्यभागे
अफ्रीकायां नियुक्तो ननु भरतधराराजदूतो मनस्वी।
मान्यो रामप्रसादो बुधजनमहितः सिद्धकाव्येतिहासः
द्वावप्यास्तां रवीन्दू विमलपरिसरे विश्वविद्यालयस्य ॥४३॥

इतिहास-विभाग के अध्यक्ष मनस्वी डॉ॰ शफात अहमद खान जो (दक्षिण) अफ्रीका में भारतीय राजदूत नियुक्त हुए और विद्वज्जनों में समादर-पात्र, काव्य एवं इतिहास दोनों में प्रखर मान्यवर डॉ॰ रामप्रसाद (त्रिपाठी)—ये दोनों ही विश्वविद्यालय के विमल परिसर में सूर्य एवं चन्द्रमा थे।

विश्वं व्याप्य स्थिता कीर्तिर्यस्य लोकातिशायिनी।
वक्तृता चांग्लभाषायामितिहासे विलक्षणा ॥४४॥
इदानीमेव स्वर्यातः वर्षाणां शतकं स्पृशन्।
जयतीश्वरीप्रसादः नयज्ञानविशारदः ॥४५॥

लोकातिशायिनी जिनकी कीर्ति सम्पूर्ण संसार में व्याप्त हुई, अंग्रेजी में तथा इतिहास में जिनकी वक्तृता अत्यन्त रमणीय एवं विलक्षण थी, ऐसे राज-नीतिशास्त्र के पण्डित डॉ॰ ईश्वरीप्रसाद जी उत्कर्षवान् हों जो शतायु होते हुए अभी-अभी दिवंगत हुए हैं।

उर्दू-फारसीभाषातत्त्वगं मित्रवत्सलम् ।
जामिन्नलीमहाभागं नौमि विद्वद्वरं मुदा ।।४६।।

उर्दू तथा फारसी भाषा के पारखी, मित्र-वत्सल श्रेष्ठ विद्वान् प्रो० जामिन अली महोदय को उछाह के साथ प्रणाम करता हूँ ।

यदीया काव्यश्रीः श्रयति मधुरां मङ्गलमयीं
स्फुटामुर्दूभाषामतिशयनवीना व्यतिकरैः ।
फिराकोऽसौ जीव्याद्रघुपतिसहायोऽक्षतवपुः
स्वयम्भूः क्रान्तेक्षी कवनपटुरात्मैकरुचिकः ।।४७।।

नूतन कल्पनाओं के कारण अत्यन्त नवीन जिनकी काव्यश्री मीठी एवं मंगलमयी परिस्फुट उर्दूभाषा को अलंकृत करती थी ऐसे यशःकाय, स्वयम्भू क्रान्तदर्शी महाकवि श्री रघुपतिसहाय फिराक चिरजीवी हों, जिन्होंने बन्धनमुक्त जीवन जिया ।

सदा देवं वन्दे नयविनयमूलं बुधवरं
महर्षि रानाडेमहितपदवाच्यं सविनयम् ।
अमोघा यन्मेधा कलयति विनोदं श्रुतिगता
षडान्वीक्षिक्यां वा सुगतमहितायां कृतपदा ।।४८।।

नय एवं विनय के मूर्तिमान् स्वरूप, विद्वद्वरेण्य महर्षि रामदेव रानाडे को सदा सविनय प्रणाम करता हूँ षड्-दर्शन में अथवा बौद्ध-दर्शन में प्रतिष्ठित जिनकी अमोघ प्रतिभा श्रुतिगोचर होते ही आनन्द की सृष्टि करती है ।

प्रसादं गोरखं वन्दे प्रसादं बी० एनाभिधम् ।
त्रिरत्नं गणितज्ञानां प्यारेलालं बुधोत्तमम् ।।४९।।

गणितज्ञों में त्रिरत्नभूत डॉ० गोरखप्रसाद, डॉ० बी० एन० प्रसाद एवं विद्वत्प्रवर डॉ० प्यारेलाल (श्रीवास्तव्य) को प्रणाम करता हूँ ।

नागराभिरुचिं मान्यं संस्कृतज्ञं विपश्चितम् ।
सिन्हाख्यं नौमि श्रीरामं गणकं नाट्यमार्मिकम् ।।५०।।

नागरजनों जैसी अभिरुचि वाले, संस्कृतज्ञ विद्वान्, नाट्यकला के मर्मज्ञ, गणितज्ञ माननीय डॉ० श्रीराम सिन्हा को मैं प्रणाम करता हूँ।

येन सर्वं हुतं विश्वविद्यालये
स्वार्जितं सद्धनं वेश्म धीवैभवम् ।
मृत्तिकाशोधकेन्द्रश्च शीलाधर-
स्मारकं येन संस्थापितं सम्मतम् ॥५१॥
यश्च शीलार्जवज्ञानविज्ञानयुक्
यस्तपःपूत आसीन्महर्षिप्रभः !
तं यशःशेषमेषोऽहमीडे गुरुं
नीलरत्नन्धरं विद्धुरि प्रोद्धुरम् ॥५२॥

जिन्होंने स्वोपार्जित पवित्र धन, घर-बार और बुद्धिवैभव-सब कुछ इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर निछावर कर दिया, जिन्होंने विख्यात शीलाधर-संस्मारक मृत्तिकाशोध-केन्द्र की स्थापना की, शील, ऋजुता, ज्ञान एवं विज्ञान के कारण जो तपःपूत महर्षि के समान तेजस्वी थे—विद्वानों की अग्रिम पंक्ति में प्रखर (अभी-अभी) यशःशेष गुरुप्रवर प्रो० नील रतन धर की मैं अर्चना करता हूँ।

धीरेन्द्रवर्महरदेवरसालधर्माः
माताप्रसाद इह रामकुमारवर्मा ।
देवीप्रसाद उदयस्सुकुलोऽप्युमेशः
वार्ष्णेयगुप्तजगदीशयुता जयन्ति ॥५३॥

यहाँ (हिन्दी-विभाग में) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० हरदेव बाहरी, डॉ० रमाशंकर शुक्ल रसाल, डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, डॉ० राम कुमार वर्मा, पं० देवीप्रसाद शुक्ल, डॉ० उदयनारायण तिवारी, पं० उमाशंकर शुक्ल, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय तथा डॉ० जगदीशगुप्त उत्कर्षवान् रहे।

द्वे पत्न्यौ ते विभातः कवनधनसृती कीर्तिलक्ष्म्यौ नितान्तं
चञ्चत्काव्यप्ररोहो विनयगुणयुतस्तेऽनवद्यस्तनूजः ।

त्वत्कन्या राजलक्ष्मीः परिजननिकरो वाङ्मयानां विलासः
तिष्ठन्नेकाङ्क्षिहर्म्ये कविकुलनृपते ! हर्ष !! सम्यग् विभासि ॥५४॥

कविता और सम्पत्ति की दात्री तुम्हारी दो पत्नियाँ हैं—कीर्ति और लक्ष्मी। विनय की गरिमा से ओतप्रोत देदीप्यमान काव्याङ्कुर ही तुम्हारा शीलवान् पुत्र है। राजलक्ष्मी तुम्हारी कन्या है और साहित्य की संरचना ही तुम्हारी सेवक मण्डली है (इस प्रकार) एकाङ्क्षी-रूपी राजप्रसाद में आसीन हे ! कविकुलभूप (डॉ० वर्मा) आप अत्यन्त शोभित हैं।

उर्दूहिन्द्यांग्लभाषा व्रजवसतिगवी मैथिली फारसी वा
का सा भाषा कला वा न खलु वशमिता या हि नाथामरस्य।
सत्कर्ताऽसौ कवीनां स्वयमपि च कविर्मानिनां माननीयः
रक्षी दक्षः कलानां जयति भुवि सुधीः मैथिलः कोऽपि नव्यः ॥५५॥

उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, व्रजभाषा, मैथिली अथवा फारसी—वह कौन सी भाषा अथवा कला थी जो निश्चित रूप से डॉ० अमरनाथ झॉ की वशंगता न हुई हो ? कवियों का समादर करने वाले और स्वयं भी (श्रेष्ठ) कवि, मानियों के भी माननीय, कलाओं के समर्थ संरक्षक कोई नूतन मैथिल विद्वान् इस पृथ्वी पर उत्कर्ष प्राप्त कर रहा है।

आंग्लभाषाविभागे यः आदावध्यक्षताङ्गतः।
एस० जी० डन्० महाभागः स्तूयतेऽद्य मया गुणैः ॥५६॥

जो सर्वप्रथम अंग्रेजी-विभाग के अध्यक्षपद पर समासीन हुए ऐसे प्रो० एस० जी० डन महोदय का, उनके गुणों के कारण स्तवन करता हूँ।

रामनाथदुबेसंज्ञं तं भूगोलविदं वृणे।
महिम्ना ज्ञानसद्भाववार्तानां योऽखिलप्रियः ॥५७॥

अपने विषयज्ञान, सद्भाव तथा बातचीत की विशेषता के कारण सर्वप्रिय भूगोलवेत्ता डॉ० रामनाथ दुबे को मेरा प्रणाम अर्पित है।

मनोविज्ञानशास्त्रेषु योऽकुण्ठप्रतिभो मतः ।
दुर्गानन्दो नु सिन्हाख्यः समवाप यशःश्रियम् ।।५८।।

मनोविज्ञान-चिन्तनों में जिनकी प्रखर प्रतिभा का लोहा सभी मानतें हैं ऐसे प्रो० दुर्गानन्द सिन्हा ने कीर्तिलक्ष्मी का वरण किया ।

विदुषां लोकमान्यानां पूज्यानाञ्च धुरि स्थितः ।
संस्कृतैतिह्यसंस्कारधर्मदर्शन-पारगः ।।५९।।
बहुश्रुतो बहुप्रख्यो बहुभाषाविशारदः ।
गोविन्दचन्द्रपाण्डेयश्चिरं जयति प्रज्ञया ।।६०।।

लोकमान्य विद्वानों तथा पूजनीयों में अग्रणी, संस्कृत-इतिहास-संस्कार-धर्म एवं दर्शन के तत्ववेत्ता, बहुश्रुत, प्रभूत यशस्वी, अनेक भाषाओं के पण्डित डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय अपनी प्रज्ञा के कारण चिरञ्जीवी हैं ।

सर्वतंत्रस्वतंत्रोऽसौ ज्ञानदानसमर्पितः ।
जसवन्तसिंहो नेगी छात्राणां जीवनं न किम् ।।६१।।

सर्वथा स्वतंत्र स्वभाव वाले, पढ़ने-पढ़ाने में समर्पित प्रो० जसवन्त सिंह नेगी तो छात्रों के 'प्राण' ही थे ।

कौशाम्ब्युत्खननादाप्तविद्वज्जनप्ररोचनः ।
स्वाभिमानी शरण्योऽसौ प्रतिवादिभयंकरः ।।६२।।
प्राक्तनैतिह्यधुर्योऽद्धा प्रकामं मित्रवत्सलः ।
इदानीं कीर्तिशेषोऽसौ गोवर्द्धनसुधीः जयेत् ।।६३।।

कौशाम्बी के उत्खनन से जिन्हें विद्वज्जनोचित प्रशंसा प्राप्त हुई, जो स्वाभिमानी, शरणागतवत्सल, वैरियों के लिये भयंकर, मित्रवत्सल तथा प्राचीन इतिहास विभाग के सच्चे अर्थों में 'धुर्य' थे और जो अब (अभी हाल ही में) कीर्तिशेष हैं ऐसे प्रो० गोवर्धनराय शर्मा जयी हों ।

विनयार्जववैदुष्यप्रतिमूर्तिश्च वित्तमः ।
सुहृदां परमानन्दः कीर्त्या कायेन जीवति ॥६४॥

विनय, सरलता एवं विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति श्रेष्ठ इतिहासज्ञ तथा मित्रजनों के परम आनन्द (बाबू परमानन्द जी) कीर्ति और शरीर—दोनों से जीवित हैं ।

राष्ट्रभाषाविभागं ये द्वे हिमाचलसन्निभम् ।
गङ्गाकलिन्दजाप्रख्येऽलञ्चक्रतुरिहाचिरम् ॥६५॥
वन्दनीये विदुष्यौ ते मम चन्द्रावती हि सा ।
मान्या शैलकुमारी च गृहीताध्ययनव्रते ॥६६॥

हिमालय-सरीखे राष्ट्रभाषा (हिन्दी) विभाग को गंगा और यमुना के समान जिन दोनों ने इस विश्वविद्यालय में चिरकाल तक अलंकृत किया, स्वाध्याय-व्रत ग्रहण करने वाली वे दोनों विदुषियाँ—चन्द्रावती त्रिपाठी तथा शैलकुमारी जी मेरे लिये वन्दनीय हैं ।

विशालाक्षो बृहद्देहो राजनीतिविशारदः ।
सरोपाधियुतः के०के० भट्टाचार्यो महीयते ॥६७॥

विशाल नेत्रों वाले, बड़ी डील-डौल वाले, राजनीति के पण्डित तथा 'सर' (sir) की उपाधि से अलंकृत प्रो० के० के० भट्टाचार्य महिमान्वित हैं ।

रवीन्द्रनाथदेवं तं प्रतिवार्तं सुनर्मदम् ।
गुरुं राजमणिं पूज्यं पुष्पोत्पतनभाषिणम् ॥६८॥
अधिस्नातककक्षं मां पाठयन्तं सदांग्लिकाम् ।
साही विजयदेवाख्यं पुण्यश्लोकं नमाम्यहम् ॥६९॥

बात-बात में मजाक करने वाले उन प्रो० रवीन्द्रनाथ देव को, फूल झरने जैसी (अंग्रेजी) बोलने वाले पूज्य गुरु प्रो० वी० राजामनि को, पुण्यश्लोक श्री विजयदेव (नारायण) साही को—बी० ए० कक्षाओं में मुझे उच्चस्तरीय अंग्रेजी पढ़ाने वाले गुरुजनों को मैं प्रणाम करता हूँ ।

उर्दूसत्काव्यमर्मज्ञो विद्वान् सहृदयोत्तमः ।
हुसेन एहतेशामः स्वगुणैः प्रार्थनाङ्कृतः ॥७०॥

उर्दू की श्रेष्ठ कविता के पारखी, विद्वान् तथा उत्तम कोटि के काव्यरसिक प्रो० एहतेशाम हुसेन अपने सद्गुणों से (लोगों के लिये) प्रार्थनीय बने रहें।

सार्धं येन गता मन्येऽनुशासनपरम्परा ।
सादरं संस्मराम्यद्य तं कर्नलतिवारिणम् ॥७१॥

अनुशासन की परम्परा जिनके साथ ही उठ सी गई प्रतीत होती है उन कर्नल जी० एस० तिवारी को आज आदर-पूर्वक स्मरण कर रहा हूँ।

योऽभवद्दर्शनाध्यक्षो रायस्तु शिवशङ्करः ।
विद्वद्वर्यस्त्रिपाठी वा ऐतिह्ये चन्द्रभूषणः ॥७२॥
अम्बादत्तोऽथ पन्तो वा लालोपपदमोहनः ।
राजनीतिविभागे क्व तादृशा गुरवोऽधुना ॥७३॥

प्रो० शिवशंकर रॉय—जो दर्शनविभाग के अध्यक्ष रहे, इतिहास में डॉ० सी० बी० त्रिपाठी और राजनीति में प्रो० अम्बादत्त पन्त एवं प्रो० मोहनलाल ! वैसे गुरुजन अब कहाँ हैं ?

मार्मिको व्रजमाधुर्याश्चित्रकारः कविमहान् ।
छन्दश्शतीदधत्कीर्तिः शास्त्रालोचनतत्परः ॥७४॥
नईकविता-पक्षधरः प्रागुत्खननकोविदः ।
श्रीजगदीशगुप्तोऽसौ हिन्दीजगति राजते ॥७५॥

व्रजभाषा की मिठास के पारखी, चित्रकार, महान् कवि, छन्दशती (नामक काव्यकृति से) यशस्वी, शास्त्रचिन्तन में निरत, नई कविता के पक्षधर तथा प्राचीन उत्खनन के जानकार डॉ० जगदीश गुप्त जी हिन्दी-साहित्य में कीर्ति प्राप्त कर रहे हैं।

क्रतश्रमौ च विद्वांसौ विज्ञानेषु यशस्विनौ
कृष्णवाचस्पती नित्यं राजेते विज्ञसम्मतौ ॥७६॥

विज्ञान की अनेक शोधों में कीर्ति अर्जित करने वाले स्वाध्यायशील विद्वान् प्रो० कृष्णा जी तथा प्रो० वाचस्पति विद्वानों द्वारा समादृत होकर निरन्तर उत्कर्ष प्राप्त कर रहे हैं।

खन्ना दामोदरो दासः प्रतिरक्षा-विशारदः ।
विश्वविद्यालयोन्नत्यै वद्धमध्यो निरन्तरम् ॥७७॥
सेवानुयोजनाकार्यैर्वर्धयन् कीर्तिवल्लरीम् ।
लक्ष्यतेऽद्यापि सोत्साहो गतिशीलो युवाऽनिशम् ॥७८॥

प्रतिरक्षाशास्त्र के पण्डित, वि० वि० की उन्नति के लिये सदैव कटिबद्ध, सेवायोजना-कार्यों से कीर्तिलता का विकास करने वाले प्रो० दामोदर दास खन्ना आज भी उत्साह-सम्पन्न तथा गतिशील युवक ही प्रतीत होते हैं।

सेवानिवृत्तविदुषां सुयशो मयेदं
संकीर्त्यते मितपदैरितिकृत्यबुद्ध्या ।
नो वा स्मरामि यदि सद्गुणरत्नसिन्धुं
सम्मान्यचारुचरितं भविताऽपराधः ॥७९॥

इतिकर्तव्यता के भाव से, यद्यपि सेवामुक्त विद्वज्जनों का ही सुयश नपे-तुले शब्दों द्वारा मैं (इस काव्य में) गा रहा हूँ, फिर भी यदि सम्मान्य श्रेष्ठ आचरण वाले, सद्गुणों के रत्नसिन्धु (कुछ लोगों का) स्मरण न करूँ तो अपराध होगा।

भाषात्रये दधदहो पटुतां विचित्रां
संस्मारयन् गणितवुद्धिभिरार्यभट्टम् ।
हृद्यानवद्यसुरवाक्कविताप्ररोहै-
र्दीप्तस्त्रिविक्रमपतिर्नितरां चकास्ति ॥८०॥

संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी-तीनों ही भाषाओं में अद्भुत दक्षता-प्राप्त (अपनी) गणितीय-प्रतिभा से आचार्य आर्यभट्ट का स्मरण कराने वाले तथा

हृद्यानवद्य संस्कृत-कविता के प्ररोहों से यशस्वी डॉ० त्रिविक्रम पति जी निरन्तर शोभित हो रहे हैं।

काव्यकाञ्चनशुद्ध्यर्थं हारीकर्तुं च यत्नतः।
वृन्दारकगवीप्रीतिर्यस्य कामदुहा मम ॥८१॥

मेरे इस काव्यरूपी काञ्चन की परख के लिये तथा यत्नपूर्वक उसे कण्ठहार बनाने के लिये (अर्थात् प्रकाशन के लिये) जिनकी संस्कृत-भाषाभिरुचि ही मेरे लिये कामधेनु बन गई।

झञ्झानिले तुहिनभूधरतां प्रपन्नं
सत्त्वश्रियं स्थिरमतिं दृढनिश्चयं तम्।
वन्दामहे कुलपतिं स्मितमेदुरौष्ठं
रामेश्वरं कवितयाऽवितया तयाऽहम् ॥८२॥

आँधी-बवण्डर में हिमालय के समान अडिग, आत्मबल-सम्पन्न स्थिर, बुद्धि वाले, दृढनिश्चयी तथा मुस्कान भरे अधरों वाले (अपने) कुलपति डॉ० रामेश्वर प्रसाद मिश्र जी की मनोवांछित कविता द्वारा वन्दना करता हूँ।

प्रकाशितोऽर्प्यते ग्रन्थो लोकेभ्यो यदि सत्वरम्।
सत्यं ब्रवीमि जानन्तु तत्कृतोऽयमनुग्रहः ॥८३॥

यदि शीघ्रतापूर्वक प्रकाशित होकर यह (मेरा) काव्यग्रन्थ लोकार्पित हो रहा है तो सच कह रहा हूँ, उन्हीं द्वारा किया गया अनुग्रह मानिये इसे।

के विमुक्ता गृहीताः के नात्र कार्या विचारणा।
सर्वेभ्यः पूर्वसूरिभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे ॥८४॥

इस प्ररोचना में कौन छूटे और कौन स्मरण किये गये—इस सन्दर्भ में तर्क नहीं करना चाहिये। समस्त पुरानी पीढ़ी के विद्वानों को हम प्रणाम करते हैं।

न स्मृतं नाम केषाञ्चित् पौर्वापर्यं खलीकृतम्।
यदि वाऽपेक्षितंवृत्तं काव्येऽत्र नानुटंकितम् ॥८५॥

तत्सर्वं क्षम्यतां विज्ञैः रागद्वेषप्रमुक्तकैः ।
क्वचिन्मे स्खलनं मन्ये कविधर्मः क्वचित्पुनः ॥८६॥

यदि मैंने कुछ लोगों का नाम स्मरण नहीं किया (अथवा) पौर्वापर्य का ध्यान नहीं रखा अथवा (किसी के विषय में) अपेक्षित तथ्य इस काव्य में प्रकाशित नहीं किया—तो वह सब राग-द्वेष से विमुक्त विज्ञ पाठकों द्वारा क्षमा किया जाय। कहीं तो मैं अपनी ही त्रुटि मानता हूँ (परन्तु) कहीं 'कविधर्म' के कारण विवश हूँ।

घटनैरितिहासज्ञः प्रभाव्यते परावरैः ।
सद्गुणैः शीलचारित्र्यैः किन्तु वाणीस्तनन्धयः ॥८७॥
इतिहासो न मन्तव्यः पूर्वसूरिप्ररोचना ।
चञ्चद्गुणाश्रितं काव्यं तदिदं प्रीतिसम्मतम् ॥८८॥

इतिहास-लेखक (ही) सार्थक-निरर्थक (समस्त) घटनाओं को लिपिबद्ध करता है परन्तु वाणी (सरस्वती) का दुधमुँहा शिशु (कवि) तो (महापुरुषों के) शील-चरित्र तथा श्रेष्ठ गुणों से ही प्रभावित हो पाता है। पूर्व-सूरियों की इस प्रशस्ति को भी 'इतिहास' न माना जाय। यह तो प्रीतिसम्मत (विद्वज्जनों के) लोकप्रिय गुणों पर समाश्रित काव्य-मात्र है।

यस्य यस्य स्मृतिर्येन क्रमेणाभ्यागता यथा ।
अप्रयत्नागतैः शब्दैः सा सा बद्धा मया तथा ॥८९॥
श्रद्धा भक्तिः पुराज्ञानं प्रमाणं ह्यत्र केवलम् ।
पौर्वापर्यं गुणासक्तिः क्व नु हन्त ! समीक्षते ॥९०॥

जिसकी-जिसकी स्मृति, जिस रूप में, जिस क्रम से आती गई, तत्काल उपस्थित (सहज) शब्दों द्वारा उसे-उसे मैंने काव्य-बद्ध कर लिया। इस वर्णना में श्रद्धा, भक्ति तथा प्राचीनों के विषय में मेरा (अपना) ज्ञान ही प्रमाण है। गुणों के प्रति उत्पन्न आसक्ति भला कहीं 'पौर्वापर्य' देख पाती है ?

चर्चा वैपश्चितीयं शमयति तनुकं लेखनेच्छां न गुर्वीं
किं वा कुर्मस्तथापि श्लथविकलधिया दीयतेऽस्यै विरामः ।

कीर्तिः प्रेक्षावतां क्व त्रिदशपुरगता नन्दनोद्यानमुग्धा
क्वेदं मोघं कवित्वं मम हृतविभवं शल्कमेवोच्चिनोमि ॥९१॥

विद्वज्जनों की यह चर्चा मेरी विशाल वर्णनेच्छा को तनिक भी शान्त नहीं कर पा रही है। फिर भी हम क्या करें? थकी हुई विकल बुद्धि के कारण अब उसे विराम दे ही रहा हूँ। कहाँ तो देवनगरी अमरावती तक पहुँची, नन्दनवन में विहरणशीला उन विद्वज्जनों की कीर्ति और कहाँ स्खलित गति वाला मेरा यह निष्फल कवित्व? बस शल्कोच्चय मात्र कर रहा हूँ।

ऋषिरामरसेन्द्वब्दे त्रयोदशदिसम्बरे।
विश्वविद्यालयस्यास्य जयन्ती स्वर्णसम्मता ॥९२॥
कुलमुख्यैस्तु सम्पन्ना श्रीमद्गुर्टूमहोदयैः।
यस्या मृद्वी स्मृतिर्नूनं मदयत्येव प्राक्तनान् ॥९३॥

ऋषि=७, राम=३, रस=९ तथा इन्दु=१ अर्थात् १९३७ ई० में १३ दिसम्बर के दिन इस विश्वविद्यालय की स्वर्णजयन्ती कुलपति पं० इकबालो नारायण गुर्टू द्वारा सम्पन्न की गई, जिसकी मीठी स्मृति निश्चय ही पुराने लोग को हर्ष-विह्वल बनाती है।

ऋषिसिन्धुरसेन्द्वब्दे त्रयोदशदिसम्बरे।
ताराचन्दे कुलपतौ जयन्ती हीरकाभिधा ॥९४॥
आध्यक्ष्ये च सरोजिन्याः सम्पन्ना समजायत।
राज्यपालपदस्थाया निर्विघ्नं मोदसङ्कुला ॥९५॥

ऋषि=७, सिन्धु=४, रस=९ तथा इन्दु=१ अर्थात् १९४७ ई० में १३ दिसम्बर के दिन डॉ० ताराचन्द के कुलपतित्व में तथा (उत्तरप्रदेश के) राज्यपाल पद पर अधिष्ठित श्रीमती सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में मोद-संकुल हीरक-जयन्ती निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

ऋषिनागरसेन्द्वब्दे वर्तमाने कुलप्रभौ।
रामेश्वरप्रसादेऽस्मिन् मिश्राख्ये भूरिविक्रमे ॥९६॥
विश्वविद्यालयस्सोयं स्वशताब्दमहोत्सवम्।
आयोजयति सोत्साहं चिराकांक्षितसुक्षणम् ॥९७॥

ऋषि =७, नाग =८, रस = ९ तथा इन्दु =१ अर्थात् १९८७ ई० में प्रभूत पराक्रम-सम्पन्न वर्तमान कुलपति डॉ० रामेश्वरप्रसाद मिश्र जी के संरक्षण में यह विश्वविद्यालय चिरकाल से आकांक्षित क्षण वाले अपने शताब्दी महोत्सव का उत्साह-पूर्वक आयोजन कर रहा है।

महोत्सवस्मृतिं नूनं विधातुं चिरजीविनीम्।
पञ्चसर्गं कृतं नव्यं शताब्दीकाव्यमुत्तमम् ॥९८॥

निश्चित रूप से इसी महोत्सव की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से पञ्चसर्ग-समन्वित, सर्वथा नवीन यह उत्तम 'शताब्दी-काव्य' प्रणीत किया गया है।

इण्डोनेशियादेशे बालीद्वीपे मनोरमे।
पुरे दैन्यप्रसाराख्ये यो हि भारतशासनैः ॥९९॥
विश्वविद्यालये प्रीत्योदयनाख्ये नियोजितः।
प्रोफेसरपदे देववाण्याः भारतसंस्कृतेः ॥१००॥
पूर्वं विदेशप्रस्थानात् वन्दते स्वीयमन्दिरम्।
मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रो देववाणीप्रवाचकः ॥१०१॥

भारत-सरकार द्वारा इण्डोनेशिया देश के मनोरम बाली द्वीप में, राजधानी डेनपसार (Denpasar) में अवस्थित उदयन विश्वविद्यालय में जो प्रीतिपूर्वक 'संस्कृत एवं भारतीय सांस्कृतिक-इतिहास' का प्रोफेसर नियुक्त किया गया है (इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में) संस्कृत-रीडर वही अभिराज राजेन्द्रमिश्र विदेश-प्रस्थान से पूर्व अपने मन्दिर की वन्दना कर रहा है।

स्वादनागरसेन्द्वब्दे एकादशदिसम्बरे ।
सत्काव्यं पूर्णतां यातं रात्रौ सार्धत्रिवादने ॥१०२॥

१९८६ ई० की ग्यारहवीं दिसम्बर की रात्रि में साढे तीन बजे यह रुचिकर काव्य पूर्णता को प्राप्त हुआ ।

मूलं श्रीकविकालिदासकविता श्रीहर्षवाणी तनुः
पत्रं श्रीजयदेवदेववचनं श्रीविल्हणोक्तं सुमम् ।
श्रीमत्पण्डितराजकाव्यगरिमा यस्य प्रपूतं फलं
जीव्याद्धन्त निसर्गजोऽयमभिराट् राजेन्द्रकाव्यद्रुमः ॥१०३॥

कविश्रेष्ठ कालिदास की कविता ही जिसकी जड़ है, श्रीहर्ष की वाणी जिसका तना है, जयदेव के संस्कृत गीत जिसके पत्ते हैं, विल्हण का काव्य जिसका पुष्प है और मान्यवर पण्डितराज (जगन्नाथ) का काव्यगौरव जिसका पवित्र फल है—अभिराज राजेन्द्ररूपी वह निसर्गजात काव्यद्रुम चिरकाल तक जीवित रहे ।

इति श्रीमदभिराजराजेन्द्रविरचिते
॥ विश्वविद्यालयशताब्दीकाव्ये प्ररोचनासर्गः ॥



परिशिष्ट-क

Vice Chancellors

1887 Sir John Edge. Kt. Q. C.
1894 T. Conlan, Esq. C. I. E.
1898 Mr Justice R. S. Aikman, LL. D.
1900 Justice Sir George Knox, Kt. LL. D.
1906 Pandit Sir Sundar Lal, LL. D., C.I.E.
1908 Sir Robert Aikman LL. D.
1909 Sir Henry George Richards, Kt. K.C.
1912 Pandit Sir Sundar Lal, LL. D., C.I.E.
1917 Sir Pramada Charan Banerji, B.A., LL. D.
1919 Sir Theodore Caro Piggott
1920 Mr Justice Gokul Prasad, M.A., LL. B.
1922 Sir Claude de la Fosse, M.A D., Litt., C.I.E.
1923 M.M. Sir Ganga Nath Jha, M.A.,D. Litt, LL. D.
1932 Pandit Iqbal Narain Gurtu, M.A., LL. B.
1938 Dr Amar Nath Jha, M.A.,D. Litt, F.R.S.L.
1947 Dr Tara Chand, M.A.,D. Phil.
1949 Dr Dakshina Ranjan Bhattacharya, M. Sc., Ph. D.
1952 Prof. Amulya Chandra Banerjee, M.A., M. Sc.
1955 Shri Bhairava Nath Jha, B. Ed (Edn)
1957 Dr Shri Ranjan, D. Sc., F.N.I.
1961 Justice P.K. Kaul
1961 Dr Bal Bhadra Prasad
1965 Shri Ratna Kumar Nehru

1968 Prof. Avadh Behari Lal
1971 Shri Chandra Mohan Bhatiya
1972 Dr Babu Ram Saxena
1973 Shri Ram Sahaya I.A.S.
1976 Dr P. D. Hazela
1979 Dr Adya Prasad Mishra M.A., D. Phil.
1980 Dr Udita Narain Singh
1983 Dr Govind Chandra Pandeya
1984 Dr Rameshwar Prasad Mishra (Present V.C.)

परिशिष्ट-ख

Chancellors

1887 Sir Alfred Comyns Lyall.
1887 Sir Auckland Colvin.
1892 Sir Charles Haukes Todd Crosthwaite.
1894 Mr A. Cadell
1895 Sir Antony Patrick (Later Lord) MacDonell.
1898 Mr James John Digges LaTouche
1898 Sir Antony Patrick (Later Lord) MacDonell.
1901 Sir James John Digges LaTouche
1907 Sir John Prescott Hewett.
1912 Sir James Scorgie (Later Lord) Meston..
1913 Mr Duncan Colvin Baillie.
1913 Sir James Scorgie (Later Lord) Meston
1917 Mr John Mitchell Holmes.
1917 Sir James Scorgie (Later Lord) Meston
1918 Sir Spencer Harcourt Butler.
1822 Sir William Sinclair Marris.
1926 Sir Samuel Perry O' Donnell.
1926 Sir William Sinclair Marris.
1928 Sir A'exander Phillips Muddiman.
1928 Nawab Sir Muhammad Ahmed Said Khan.
1928 Sir William Malcolm (Later Lord) Hailey..
1928 Mr (Later Sir) Grorge Bancroft Lambert.

1933 Nawab Sir Muhammad Ahmed Said Khan.
1934 Sir Harry Graham Haig.
1939 Sir Maurice Hallet.
1945 Sir Francis Wylie.
1947 Smt Sarojini Naidu.
1949 Shri Homi P. Mody.
1952 Shri Kanhaialal Maniklal Munshi.
1957 Shri Venkat Varah Giri.
1961 Shri Ram Krishna Rao
1962 Shri Vishwa Nath Das.
1967 Dr B. Gopala Reddi.
1972 Mohammad Akabar Ali Khan.
1975 Dr M. Chenna Reddi
1975 Shri G. D. Tapase
1980 Shri C. P. N. Singh
1984 Shri M. Usman Arif. (Present Chancellor)

□

परिशिष्ट-ग

अभिराज डॉ० राजेन्द्रमिश्र-प्रणीत साहित्य (प्रकाशित)

संस्कृत-रचनायें

१. नाट्यपञ्चगव्यम्	(एकाङ्कीसंग्रहः)	...	१५/-
२. अकिञ्चनकाञ्चनम्	(,, ,,)	...	१०/-
३. नाट्यपञ्चामृतम्	(,, ,,)	...	२०/-
४. चतुष्पथीयम्	(,, ,,)	...	१५/-
५. रूपरुद्रीयम्	(,, ,,)	...	२५/-
६. प्रमद्वरा नाटिका	(चतुरंकिका)	...	१२/-
७. आर्यान्योक्तिशतकम्	(खण्डकाव्यम्)	...	१५/-
८. नवाष्टकमालिका	(,, ,,)	...	१०/-
९. पराम्बाशतकम्	(,, ,,)	...	१०/-
१०. अभिराजसप्तशती	(,, ,,)	...	२५/-
११. वाग्वधूटी	(गीत-संग्रहः)	...	२२/-
१२. मृद्वीका	(,, ,,)	...	१५/-
१३. इक्षुगन्धा	(कथा-संग्रहः)	...	१५/-
१४. जानकीजीवनम्	(महाकाव्य-पूर्वार्धः)	...	२५/-
१५. शताब्दीकाव्यम	(खण्डकाव्यम्)	...	१५/-

हिन्दी-रचनायें

१६. वेदना (खण्डकाव्य)
१७. पनघट (प्रतीकात्मक खण्डकाव्य)
१८. पूर्णकाम (भरत पर आश्रित खण्डकाव्य)
१९. गृहत्याग (गौतम बुद्ध पर आश्रित खण्डकाव्य)
२०. मुक्तिदूत (गान्धी पर आश्रित खण्डकाव्य)

२१. बच्चों के पाहुन (बाल-साहित्य)
२२. पढ़ो और बनो (,, ,,)
२३. वन के गीत : मन के मीत (,, ,,)
२४. नया विहान (,, ,,)
२५. तितली के पंख (,, ,,)
२६. महाभारत की किशोर-कथायें (,, ,,)
२७. रक्ताभिषेक (,, ,,)
२८. दो पात नींबू : तीन पात अमोला (काव्यसंकलन)
२९. मुक्तधारा (,, ,,)
३०. सपनों में डूब गया मन (,, ,,)
३१. पलकों के बन्द द्वार ! (,, ,,)
३२. मणिकाञ्चन (शोधनिबन्धों का संग्रह)
३३. संस्कृत साहित्य में अन्योक्ति (शोधप्रबन्ध)
३४. छन्दोऽलङ्कारसौरभम् (पाठ्यग्रन्थ)
३५. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्गः) (,, ,,)
३६. कादम्बरीकथामुखम् (,, ,,)
३७. रसनिरूपणम् (,, ,,)

प्रमुख अप्रकाशित कृतियाँ[1]

१. श्रुतिम्भरा (संस्कृत गीतसंग्रह)
२. वामनावतरणम् (महाकाव्य)
३. चौरशतकम् (प्रणयकाव्य)
४. गन्धमादन (राष्ट्रीय हिन्दी कवितायें)
५. तटस्था (जनवादी हिन्दी कवितायें)
६. बदरा भइल मोरा दूत (मेघदूत का भोजपुरी रूपान्तर)
७. सकुन्तला (९ सर्गों का भोजपुरी महाकाव्य)

---

१. अभिराज-साहित्य के वितरक :

वैजयन्त प्रकाशन, ८ बाघम्बरी मार्ग, इलाहाबाद।